गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2012-2014

श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास
इन्दौर

golalariya_darshan@yahoo.co.in

गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

मासिक
गोलालारीय दर्शन
अपनों के साथ अपनी बातें

जो भरा नहीं हैं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। हृदय नहीं पत्थर हैं वो, जिसे समाज से प्यार नहीं।

वर्ष : 4 अंक : 1 पृष्ठ संख्या : 10 माह – जून 2012 सहयोग राशि : 100 रु.

अतिथि सम्पादक की कलम से...

बेटियों के बिना भारत माँ

कल्पना कीजिए उस आंचल की जिसमें ईश्वर का सबसे खूबसूरत उपहार बेटियां ना हो? एक तरफ हम नई नई ऊंचाईयों को छू रहे है हमें अपने भारतीय होने पर गर्व होता है, वहीं दूसरी ओर समाज के कुछ कड़वे सच है जिसे देखकर भी हम अनदेखा कर रहे है। सोचते है इससे हमारे जीवन व परिवार पर कोई फर्क नहीं पड़ रहा है ऐसा कर हम कुछ गलत भी तो नहीं कर रहे है। लेकिन हर चीज, हर घटना का असर होता है हमें भी कभी ना कभी इन चीजों से गुजरना ही पड़ेगा है। 'भ्रूण हत्या' जैसे पाप से उठने वाली आग की लपटे हमें भी कभी ना कभी झुलसा ही देगी । बहू बेटियों को मारने जैसे जघन्य अपराध हो तो उसे ईश्वर भी कैसे माफ करेगा ?

हम सभी की जिंदगी में सबसे खास यदि कोई है तो वह है – माँ। औरत, महिलाओं या बच्चियों के बगैर हम दुनिया या यूं कहे इंसानियत को आगे नहीं बढ़ा सकते हैं।

कन्या भ्रूण जिसका अभी कोई अस्तित्व नहीं है लेकिन जो प्राकृतिक रुप से सृष्टि को आगे बढ़ाने का दायित्व लेकर अपनी मां की कोख में आई है उसे इस दुनिया में लाने का दायित्व मां–बाप के साथ डाक्टरों का भी है । लेकिन डाक्टर ही यदि कन्याभ्रूण की हत्या कर सबूत मिटाने के लिए भ्रूण कुत्तों को खिला देता है तो फिर समाज और हम क्या कर रहे हैं ? यह दिल दहलाने वाली बर्बर घटना महाराष्ट्र के बीड इलाके की है जहां लिंग अनुपात सबसे कम है 1000 लड़को पर केवल 801 लड़कियां। जबकि राष्ट्रीय जनगणना 2011 में प्रति हजार लड़कों पर 914 लड़कियां है। जब हम इस अनुपात को राष्ट्रीय जनसंख्या से मेल करेंगे तो आप और हम दहल जावेंगे क्योंकि यह अंतर करोड़ों का हो जायेगा।

केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन की रिपोर्ट अनुसार भारत में 682000 कन्या भ्रूण हत्याएं हुई है। यूनिसेफ के अनुसार 10% महिलाएं विश्व की जनसंख्या से लुप्त हो चुकी है यानि की 40 सालों में 3 करोड़ लड़कियों की हत्या हुई है। अल्ट्रा साउंड मशीन आने के बाद हालात बहुत बदतर हुए हैं।

विश्व में केवल कोरिया ही ऐसा देश है जिसने कन्या भ्रूण हत्या पूर्ण प्रतिबंध लगाया है । भारत के पंजाब राज्य के नंवा शहर में लड़के लड़कियों का अनुपात बराबर है जो शुभ संकेत है। ऐसा ही शुभ संकेत म.प्र. के **मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंहजी चौहान** ने अपने अथक प्रयासों से लाड़ली लक्ष्मी योजना, कन्यादान योजना और बेटी बचाओं अभियान चलाकर दिया है। जिससे प्रदेश की समस्त बेटियां अपने मामा श्री शिवराजसिंहजी की सदैव ऋणी रहेगी। यदि यह जघन्य अपराध रोका ना गया तो इसके अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने आयेगे जैसे सामाजिक अपराध, महिलाओं पर अत्याचार, शादी के लिए क्रय विक्रय, अपहरण व बलात्कार जैसी घटनाएं होगी। बहुपति प्रथा व स्वयंवर जैसी कुरीति को बढ़ावा मिलेगा। एक समय ऐसा आयेगा कि चारों तरफ सिर्फ लड़के ही लड़के दिखाई देंगे। जिन लड़को को हमने बड़ी चाहत से पाला पोसा है उनको कोई जीवन साथी नहीं मिल पायेगा, वे कुंवारे ही रह जायेगे बिल्कुल अकेले। आने वाले 10 सालों में दो करोड़ लड़कों को लड़कियां नहीं मिल पायेगी। कल्पना कीजिए उस वीराने की उस दुखदाई स्थिति की जिसमें सुकुमारी नाजुक और रिश्तों को सहेजकर रखने वाली लड़कियां नहीं होगी। भारत मां केवल लड़कों की ही मां बनकर रह जायेगी । अत: बेटियों को अपने अपने स्तर पर सहेज कर रखे। इसी कामना के साथ...

साधना जैन
आकाशवाणी उद्घोषिका, भोपाल

भ्रूण हत्या – एक माँ ही रोक सकती है इस पाप को ।

देश भर में बेटियों की लगातार और तेजी से घटती संख्या न केवल आंकड़ों वरन् बिगड़ते सामाजिक संतुलन की दृष्टि से भी चिंता का विषय है। लिंगानुपात में क्रमश: आ रही गिरावट हमें सोचने को विवश करती है कि आखिर क्यों हम स्वयं ही अपने सामाजिक विनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं? भौतिकवादी विकास की ओर तेजी से बढ़ते मानव ने एक और पर्यावरण और प्रकृति का विनाश किया है, वहीं दूसरी और उसके स्वार्थ और अहंवादी सोच ने मानव समाज की संरचना और संगठन को भी बुरी तरह प्रभावित किया है। आज देश के लगभग हर प्रान्त और हर समाज में बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या हम भविष्य के भयावह परिणामों के प्रति सजग है।

प्रकृति ने हर क्षेत्र में अपना संतुलन स्थापित रखा है इसलिये नर और नारी का अनुपात लगभग बराबर रखा है। एक आदर्श परिवार में पति पत्नी और पुत्र पुत्री के रुप में भी यह संतुलन कायम रहता है। यदि हम प्रकृति के इस नियम की अवहेलना करते हुए परिवार में केवल पुत्रों को ही जन्म देना चाहें और पुत्रियों को पैदा ही न होने दें तो पारिवारिक असंतुलन पैदा होगा जिसके परिणाम पारिवारिक, सामाजिक और नैतिक स्तर पर कदापि अच्छे नहीं होगे। हम भली भांति जानते है कि प्रकृति ने जन्म देने का अधिकार केवल स्त्री को ही दिया है। यदि कन्या भ्रूण हत्या जैसी दुष्प्रक्रिया इसी तरह जारी रही तो एक समय स्त्री जाति का नितांत अभाव हो जायेगा। क्या तब 'जननी बिना जन्म' की प्रक्रिया संभव हो सकेगी? शनै: शनै: ही सही पर क्या हम अपनी मानव जाति के विनाश को आमंत्रण नहीं दे रहे?

पुरुष और स्त्री मूलत: एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति ने पुरुष को जहाँ बल और साहस जैसे गुण दिये वहीं स्त्री को दया और धैर्य जैसे गुणों से विभूषित किया। एक सफल जीवन के लिये इन सभी गुणों का समावेश होना चाहिये, इसीलिये परिवार नामक इकाई की कल्पना की गयी जिसमें पुरुष और स्त्री परस्पर सहयोग से जीवन की कठिनाइयों का सामना कर सके। क्या हम स्त्री विहीन परिवार की कल्पना कर सकते हैं? यदि बेटियों की संख्या इसी प्रकार घटती रही तो परिवार नामक इकाई का गठन कैसे होगा ?

हमारे विश्लेषण बताते हैं कि आज स्त्रियाँ ही बेटियों की सबसे बड़ी शत्रु साबित हो रही है। आँकड़ों के अनुसार भारत में हर वर्ष करीब 6 लाख कन्या भ्रूण हत्याऐं होती है, इस कृत्य में किसी न किसी रूप में महिला की ही भूमिका अधिक होती है। पुरुष ही नहीं, कितनी ही स्त्रियाँ स्वयं बेटियों को जन्म नहीं देना चाहती। 'छोटा परिवार, सुखी परिवार' की चाह में कितने ही तथाकथित आधुनिक परिवार 'सिर्फ एक बेटा' ही चाहते है और इस हेतु न केवल कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य पाप करने से भी नहीं हिचकिचाते वरन् गलती से जन्मी हुई बेटी को भी मौत के घाट उतार देते है। अभी पिछले दिनों माँ की ममता एक क्रूर मजाक उड़ाती एक घटना घटी। एक अस्पताल में किसी मानवीय त्रुटिवश एक नवजात कन्या दूसरी मां के नवजात पुत्री से बदल गयी। बाद में सत्य प्रकट होने पर जब कन्या को उसकी माँ को सौंपा गया तो पुत्र की चाह में अंधी उस माँ ने अपनी ही जन्मी बेटी को स्वीकार करने से इंकार कर दिया और नन्हीं सी मासूम बच्ची लावारिस बनकर रह गयी। इस तरह की घटनायें नयी नहीं है, परन्तु आज जबकि शिक्षा का इतना प्रचार प्रसार हो रहा है, इस तरह की घटनायें सोचने को विवश करती हैं कि क्यों एक माँ एक स्त्री होकर भी स्त्री के अस्तित्व को नकारना चाहती है? क्यों एक नारी ही नारी की शत्रु बन अंतत: अपनी ही जाति का विनाश चाहती है? इस पुरुष प्रधान समाज में जहां महिलायें आज हर क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है, वहीं दूसरी ओर कन्या भ्रूणहत्या, कन्या वध, और बेटी बेटे में भेदभाव कर अपनी ही जड़े कमजोर कर रही है। यह कैसा विरोधाभास है? इस तरह तो इस पुरुष प्रधान समाज की सत्ता को, पुरुषवादी अहं को हम और सुदृढ़ कर रहे हैं।

एक ओर बेटियों की घटती संख्या उनके अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर रही है, वहीं बेटों की बढ़ती संख्या भी भयावह भविष्य का संकेत कर रही है। इससे भविष्य में शिक्षा और रोजगार के लिये परस्पर संघर्ष व प्रतिस्पर्धा और अधिक बढ़ेगी। परिणामस्वरूप 'योग्यतम की उत्तरजीविता' ही कायम रह सकेगी और कम योग्यता वाले हजारों लाखों युवा अपने आपको घोर निराशा और हताशा में डूबा पायेंगे। इससे समाज में अपराध और दुराचार कई गुना बढ़ जायेंगे। पिछले दिनों एक फिल्म में इस समस्या को बड़ी ही मार्मिकता से उठाया गया। इसमें एक पुरुष बहुल गाँव की कहानी दर्शायी गयी जिसमें लड़कियां अत्यंत नगण्य संख्या में है। वहां अविवाहित लड़को की बड़ी संख्या है किन्तु विवाह हेतु लड़कियां ही नहीं है। परिणामस्वरुप निराश, हताश और नैतिक मूल्यों से विहीन ये युवा दुराचार में संलिप्त है। आज हमारे अखबार भी सामूहिक दुराचार और बलात्कार की घटनाओं से अटे पड़े है। क्या हम इन घटनाओं की नैतिक जिम्मेदारी लेने का साहस कर सकते हैं।

तो आइये हम अपने जैन धर्म के महान सिद्धांत 'अहिंसा परमो धर्म:' का पालन करते हुए शपथ लें कि कन्या भ्रूण हत्या और कन्या वध जैसे जघन्य पाप कभी नहीं करेंगे। 'जियो और जीने दो' को सम्मान देते हुए कन्या जन्म का स्वागत करे। परिवार के वरिष्ठजन घर में ऐसा वातावरण निर्मित करें जिसमें बेटियों को प्रोत्साहित किया जाये, उनके जन्म पर भी खुशियां मनाई जाये और बेटी बेटे में भेदभाव न किया जाये। हमारे साधु संत जो कि हमारे समाजोद्धारक हैं, भ्रूणहत्या जैसे पाप का विरोध करे। ऐसे परिवारों का सामाजिक बहिष्कार किया जाये जहां भ्रूण हत्या जैसा पापाचरण किया गया हो। ऐसी सामाजिक योजनायें बनाई जाये जिसमें 'बेटी बहुल' गरीब परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाये ताकि बेटी को परिवार में 'बोझ नहीं, वरदान समझा जाये'। समय आ गया है ऐसे ठोस कदम उठाकर बेटियों को बचाने का, ताकि उन्हें भी जीने का समान अधिकार मिल सके। क्योंकि –

माँ का प्यार, पिता का ताज है बेटी, सुख दुख में देती है साथ बेटी,
बेटा है गर चिराग वंश का, सहेजती दोनों कुलों की लाज है बेटी।

– अनुपमा जैन, सह संपादिका

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है। यदि आपके किसी रिश्तेदार तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें।

परामर्श प्रमुख

डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत, 9837043221
डॉ. कपूरचंद जैन, खतौली, 9412678256
प्रधान संपादक
राजेन्द्र जैन ''बागो'', 9424013136
प्रबंध संपादक
राजेन्द्र कुमार जैन, सायकलवाले, 9425353972
खुशालचन्द जैन, 9302123879
कोमलचंद जैन, 9329524227
कोषाध्यक्ष –
सुधेश कुमार जैन, 9827254111
संयोजक –
बाहुबली जैन, 9827247847
सह संपादक
श्रीमती अर्चना अजय जैन, 9827796013
श्रीमती अनुपमा रजनीश जैन, 9009066884

क्षेत्रीय संबाददाता

श्री प्रकाशचंद जैन, नागपुर

संरक्षक

श्री आनंद मांगीलाल जैन, इन्दौर
श्री निशांत नरेन्द्रकुमार जैन, इन्दौर

विशेष सहयोगी

श्री अश्विन जैन, जबलपुर
श्री निर्मल कुमार जैन, ज्योत्षाचार्य, जबलपुर
श्री राजकुमार जैन, एस.बी.आई, जबलपुर
डॉ. सुनील जैन, जबलपुर
सिं. चन्द्रकुमार जैन 'ठेकेदार', जबलपुर
श्री जयकुमार जैन, जबलपुर
श्री आलोक जैन, कोषाध्यक्ष, जबलपुर
श्री अरविन्द कुमार जैन 'बाकल', जबलपुर
श्री राजेन्द्रकुमार जैन, एस.बी.आई. उज्जैन

आजीवन सदस्य

श्री सुनील कुमार जैन, शिवानन्द नगर, अहमदाबाद
श्री अनिल कुमार जैन, गजराज सोसायटी, अहमदाबाद

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	– 21000/–
परम संरक्षक(अ.जा.)	– 11000/–
संरक्षक (अ.जा.)	– 5100/–
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	– 2100/–
आजीवन शुल्क	– 1100/–
पंचवर्षीय सहयोग	– 250/–

आप गोलालारीय दर्शन में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के बैंक खाता क्रं. 63048875855 में जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी कार्यालय पर अवश्य भेंजे ताकि सहयोग राशि की रसीद आपको भेज सके ।

विज्ञापन शुल्क

अंतिम फुल पेज	3000/–
1/2 पेज	2000/–
1/4 पेज	1000/–
कॉलम	500/–
मांगलिक बधाई फोटो सहित	500/–
शोक संदेश फोटो सहित	200/–
बॉयोडाटा फोटो सहित	100/–

महावीर जयंती हर्षोल्लास के साथ संपन्न

झांसी, राजेश जैन। अहिंसा परमो धर्म: एवं जीयो और जीने दो का संदेश देने वाले जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की 2611वीं जयंती हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर गाजे बाजे के साथ निकली शोभा यात्रा में भक्तगण नाचते गाते, धूम मचाते चल रहे थे। सर्वप्रथम प्रात:काल की बेला में निकली प्रभात फेरी में नगर के प्रमुख मार्गो से भगवान महावीर का जयघोष लगाकर बच्चे, युवा, बुजुर्ग एवं मातृशक्ति ने वातावरण को गुंजायमान कर दिया।

जैन तीर्थ स्थली करगुंवाजी के समीप करुणा स्थली पर भगवान महावीर की विशाल प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक सांगानेर (जयपुर) से पधारें पं. महेश शास्त्रीजी के निर्देशन में संपन्न हुआ। इस मंगलोत्सव में ध्वजारोहण प्रभागीय वनधिकारी, झांसी वी. के. जैन एवं दीप प्रज्जवलन कैलाशचंद जैन ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नगर विधायक पं. रवि शर्मा रहे। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि भगवान महावीर का संदेश सिर्फ एक सम्प्रदाय के लिये नहीं, अपितु समूचे विश्व की मानव जाति के लिये है। उनके द्वारा बताये सत्य अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही विश्व में शांति कायम हो सकती है। इस मौके पर अतिथियों का स्वागत प्रवीण, कमल एवं बाहुबली जैन ने किया। इस अवसर पर भारत विकास परिषद के तत्वावधान में एवं देवेन्द्रसिंह के नेतृत्व में शीतल पेय एवं ठंडाई का वितरण पूर्व की भांति किया गया। सायंकाल में भगवान का पालना एवं बाल काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।

भगवान महावीर जयंती की पूर्व संध्या पर पत्रकार भवन में 'भगवान महावीर आज की आवश्यकता' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में विभूति आर्यिका सरस्वती भूषण माताजी ने कहा कि हम भगवान महावीर को मानने के लिये तो तैयार है लेकिन उनके आदर्शों को अपनाये बिना व्यक्ति को अपने जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती। उन्होंने उपस्थित जन समुदाय को चमड़े का परित्याग करने का संकल्प दिलाया। मुख्य अतिथि केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री, भारत सरकार प्रदीप जैन आदित्य ने इस मौके पर कहा कि भगवान महावीर का दर्शन प्राणी मात्र के कल्याण का दर्शन है, अहिंसा के बल पर विश्व की तमाम समस्याओं का हल खोजा जा सकता है। इस अवसर पर कैलाशचंद जैन, (दैनिक विश्व परिवार), जिनेन्द्र जैन, शैलेन्द्र जैन, डॉ. हीरालाल जैन, ललित जैन, डॉ. जिनेन्द्र जैन, विनोद जैन, अमित जैन, आलोक जैन, प्रदीप जैन, गोकुलचंद जैन, रिषभ जैन, आदि उपस्थित रहे।

जबलपुर, अरविन्द जैन बाकल। सकल जैन समाज की शोभायात्रा सुबह 7 बजे हनुमानताल जैन मंदिर से प्रारंभ होकर शहर के मुख्य मार्ग से होती हुई कमानिया गेट आयी। कमानिया गेट से अन्य झांकियां एवं पालकियां शोभायात्रा में सम्मिलित हुई। जुलूस में शहर के 30 मंदिरों की 24 झांकियां, 24 रजत पालकी, 4 श्रीजी के रथ, 48 बग्घी, 30 बैंड पार्टी, 12 धमाल पार्टी, 36 घोड़े एवं बड़ी संख्या में जैन समुदाय के लोग सम्मिलित हुये। जुलूस में परम पूज्य 108 मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज ससंघ एवं पूज्य आर्यिका संघ भी थीं। जबलपुर के इतिहास की यह सबसे बड़ी शोभायात्रा थी। शोभायात्रा का जुलूस विभिन्न मार्गो से होता हुआ कमानिया गेट पर वापस आया जहां पर सभी मंदिरों की पालकी एवं श्रीजी पालकी कमानिया गेट पर महाशांति धारा कार्यक्रम हेतु रखी गई। दोपहर में 120 सौधर्म इन्द्र, ईशान इन्द्र आदि द्वारा महाशांति धारा की गई उसके बाद मुनि पुंगव श्री सुधासगरजी महाराज द्वारा धर्मसभा को सम्बोधित किया गया। शोभायात्रा में सांसद राकेशसिंहजी, विधायक शरद जैन, महापौर प्रभात साहूजी, पूर्व सांसद रामेश्वर नीखराजी, नगर कांग्रेस अध्यक्ष दिनेश यादवजी, पार्षद मुकेश राठौर सहित अन्य जनप्रतिनिधि सम्मिलित हुये। मुनि श्री ने प्रवचन के उपरांत लम्हेटा स्थित गोपालपुर में तीर्थ क्षेत्र बनाने की घोषणा की। श्री दिगम्बर गोलालारीय जैन नवयुवक सभा के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति महावीर जयंती के उपलक्ष्य में वृद्ध आश्रम एवं कुष्ठ आश्रम जाकर भगवान महावीर स्वामी के संदेशों का वाचन किया। भगवान महावीर के 2611वीं जयंती के उपलक्ष्य में आश्रम में रह रहे निशक्तजनों को फलों का वितरण किया गया। श्री सुधीर जैन बालाजी, अरविंद जैन भाई जी द्वारा भगवान महावीर के सत्य, अहिंसा और जीयो और जीने दो के संदेशों का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन संस्था अध्यक्ष अरविंद जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जय कुमार जैन, आलोक जैन, अश्विन जैन, रवीन्द्र जैन, अशोक जैन (अंतू), ऋषभ मोदी एवं रितेश मोदी का विशेष सहयोग रहा।

विदिशा, कन्छेदीलाल जैन। जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर शासन नायक भगवान महावीर की जन्म जयंती ऐलक श्री नि:शंकसागरजी के सानिध्य में अत्यंत हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाई गई।

सोमवार को प्रात:काल की बेला श्री महावीर दि. जैन मंदिर में महावीर स्वामी विधान का आयोजन सामूहिक रुप से संपन्न किया गया। मंगलवार को प्रात: 5.30 बजे से श्री चंद्रप्रभु मंदिर से प्रभात फेरी प्रारंभ होकर श्री शांतिनाथ मंदिर, श्री महावीर दि. जैन मंदिर से होते हुए मुख्य मार्गों से चलकर श्री शीतलनाथ दि. जैन छोटा मंदिर एवं श्री पार्श्वनाथ जिनालय की प्रभातफेरी संयुक्त रुप से मिलकर माधवगंज मालवीय उद्यान पहुँचकर ध्वजारोहण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसी दिन शाम को महावीर दि. जैन मंदिर के विशाल प्रांगण में इन्द्रसभा का रंगारंग आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

प्रात: 5.43 बजे श्री महावीर दि. जैन मंदिर में मुख्य रुप से मूल नायक भगवान महावीर स्वामी का अभिषेक, शांतिधारा एवं सामूहिक पूजन का कार्यक्रम बड़े ही उत्साह के साथ संपन्न हुआ। प्रात: 8 बजे श्री शीतलनाथ दि. जैन छोटा मंदिर किले अंदर से भगवान महावीर स्वामी की शोभायात्रा प्रारंभ की गई। स्थान स्थान पर स्वागत हेतु वंदनवार एवं रंगोली सजाई गई। शोभायात्रा में शामिल साधर्मीजनो, माता बहिनों के लिए शीतलपेय आदि की व्यवस्था अनेक स्थानों पर की गई। शोभा यात्रा के माधवगंज जयप्रकाश मंच पर पहुंचने पर भगवान का अभिषेक किया गया तत्पश्चात ऐलकश्री के प्रवचन में भगवान महावीर स्वामी के जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला गया। वित्तमंत्री श्री राघवजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में वर्द्धमान की ज्यादा आवश्यकता है।

कार्यक्रम के अंत में सभी साधर्मी बंधुओं को श्री संजय जैन (मामा) द्वारा मिष्ठान वितरण किया गया।

नागपुर, प्रकाशचंद जैन। महावीर जयंती के अवसर पर शहर में अनेक कार्यक्रमों में समाजजनों ने अत्याधिक उत्साह से भाग लिया । प्रात: दिगम्बर जैन परवार मंदिर से शोभायात्रा मुख्य मार्गों से होती हुई चिटणीस पार्क पहुंची। जहां आचार्यश्री की परम शिष्या प.पू. 105 आर्यिका आदर्शमतिजी के सानिध्य में मांगलिक प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय ने पूर्ण मनोयोग के साथ उठाया। कार्यक्रम स्थल पर नंदन चिल्ड्रन हास्पिटल की ओर से चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें अनेक विभागों के डाक्टरों ने अपनी सेवाएं प्रदान की। रक्तदान शिविर में कई साधर्मी बंधुओं ने मानवसेवा हेतु रक्तदान कर अपना अमूल्य सहयोग दिया। कार्यक्रम स्थल पर स्वामी वात्सल्य का आयोजन रखा गया था। रात्रिकालीन सत्र में अहिंसा सभा का आयोजन चिटणीस पार्क में रखा गया इसके पूर्व संगीत संध्या का आयोजन राष्ट्रीय दृष्टिहीन शिक्षण संस्था पर हुआ। उपस्थित समाजजनों ने बड़ी ही तन्मयता से इस कार्यक्रम का आनंद उठाया।

भोपाल, प्रदीप जैन। भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयंती पर नगर के समस्त मंदिरों पर भव्य साज सज्जा की गई, अनेक मंदिरों में प्रभात फेरी का आयोजन भी हुआ। प्रात: नित्य पूजा पश्चात विशेष प्रवचनमाला भी आयोजित की गई। मंदिरों में भगवान महावीर स्वामी का पालना झुलाकर बच्चे और महिलाओं ने आनंद उठाया। रात्रि में विशेष आरती में समस्त समाजजनों ने शामिल होकर धर्मलाभ अर्जित किया।

सागर, राकेश जोहरी। नगर के सभी मंदिरों में महावीर जयंती के अवसर पर अनेक कार्यक्रम हुए। समाजजनों ने अपने–अपने क्षेत्रों के मंदिर में विशेष पूजा अर्चना कर धर्मलाभ लिया। महावीर स्वामीजी के संदेशों को जीवन में उतारकर ही यह भव पार किया जा सकता है। मंदिरों में इस अवसर पर विशेष प्रवचन का आयोजन भी हुआ।

अनुरोध – आपके नगर में आयोजित कार्यक्रमों की सचित्र जानकारी व किसी भी धार्मिक, सामाजिक कार्यों में अपने समाज सदस्यों की सहभागिता है तो वह खबर हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण समाचार है। ऐसी खबरों की सचित्र जानकारी हमे PDF/JPEG फाईल में अपना नाम व शहर का नाम लिखकर ई–मेल करें ।

अहमदाबाद, श्रेयांस धमसैया। मुनिश्री प्रज्ञासागरजी महाराज के सानिध्य में महावीर जयंती समारोह पर समग्र दिगम्बर जैन समाज की भव्य शोभायात्रा डी.के. पटेल हॉल पर संपन्न हुई। इस विशाल शोभायात्रा में श्रीजी के रथ के साथ अनेक घोड़ा गाड़ी, ऊंटगाड़ी, बैंड बाजे थे। शोभा यात्रा के अंत में स्वामी वात्सल्य का आयोजन भी हुआ।

नगर में गोलालारीय परिवार बाहुल्य क्षेत्रों के मंदिर में अनेक कार्यक्रमों रखे गए। नगर के समस्त मंदिरों में सुन्दर विद्युत सज्जा की गई थी।

धनलक्ष्मी सोसायटी के 1008 श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर में रात्रि को विशेष आरती का आयोजन रखा गया। सुबह नित्यपूजा पश्चात प्रवचन, पालना झुलाने के अतिरिक्त कई रोचक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

अंबिका नगर, ओढ़व में श्रीजी की रथयात्रा क्षेत्र के प्रमुख मार्गो से होती हुई 1008 श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर पर अभिषेक पश्चात संपन्न हुई।

श्री हरीशचंदजी के अनुसार गोलालारीय समाज के सदस्यों सहित लगभग 700 श्रावकों ने शोभायात्रा में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, कार्यक्रम के अंत में स्वामी वात्सल्य रखा गया था। गोमतीपुर स्थित 1008 श्री संभवनाथ दि. जैन मंदिर से इस अवसर पर भव्य शोभा यात्रा निकाली गई, समाजजनों ने पूर्ण भक्तिभाव से शामिल होकर धर्मलाभ उठाया। श्री सुरेन्द्र कुमारजी ने बताया कि इस मंदिर में परम्परानुसार पूजा अर्चना कर कार्यक्रम का आयोजन होता है श्रीजी की रथ यात्रा में गोलालारीय परिवारों में अति उत्साह से भाग लिया। लगभग 1000 बंधुओं ने उपस्थित होकर भगवान महावीर स्वामी के अमर संदेश 'जीओ और जीने दो' को जन जन तक पहुंचाने का प्रण लिया। कार्यक्रम के अंत में स्वामी वात्सल्य का आयोजन रखा गया था।

महावीर जयन्ती पर आयोजित हुई विशाल संगोष्ठी

खतौली (उ.प्र.) डॉ. कपूरचंद जैन। 'भगवान महावीर' और जैन धर्म को जानने के लिए पंच अकार को जानना जरूरी है' भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर रोटरी क्लब, खतौली द्वारा रोटरी भवन में आयोजित विशाल संगोष्ठी में उक्त विचार शिक्षाविद् डा. कपूरचंद जैन ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि आस्तिक्य या आस्था जैन धर्म ही नहीं सभी धर्मों की प्रथम सीढ़ी है। बिना श्रद्धा के धर्म के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ा जा सकता। अहिंसा की विशद व्याख्या करते हुए कहा कि अहिंसा और हिंसा का गणित बहुत अटपटा है। कभी एक हिंसा करता है, फल अनेक भोगते हैं, कभी अनेक हिंसा करते हैं फल एक भोगता है। कभी करते कम है भोगना ज्यादा पड़ता है। यह सब भावों का खेल है। जैन धर्म भावना प्रधान है हमारी दण्ड संहिता में भी यही तथ्य देखने को मिलते हैं। इस सन्दर्भ में उन्होंने आचार्य अमृत चन्द्र सूरि को उद्धृत किया – एक: करोति हिंसा, हिंसा फलभागिनो भवन्ति बहव: । बहव: विदधति हिंसा, हिंसा फलमुक्भवत्येक: ।।

दूसरा अकार अस्तेय है, हम लोभ के कारण उतना पाप नहीं करते जितना लालच के कारण करते है। जो वस्तु हमारे पास नहीं उसकी प्राप्ति के लिए सतत चिन्ता ही लालच है, वह मिले या न मिले किन्तु भावना से हम पाप कर बैठते है। हमारे पास वस्तुओं का उतना परिग्रह नही है, जितना हम उनके प्रति मूर्च्छा (यह मेरा है, मेरा है) की भावना के कारण परिग्रही हो जाते है। अनेकान्तवाद आज विश्वशान्ति के लिए परमावश्यक है, यदि हम मतभेद भुलाकर समन्वयवाद की भावना अपनायें तो स्वत: ही शान्ति आ सकती है। एकान्तवाद विषमता और असहिष्णुता को बढ़ाता है जबकि ''किसी दृष्टि से मैं सही हूँ किसी दृष्टि से आप सही है।'' ऐसा विचार सुख–शान्ति लाता है। लगभग 1 घंटे के उनके व्याख्यान को श्रोताओं ने एकटक होकर सुना। आरम्भ में रोटरी क्लब के पदाधिकारी ने डा. जैन का सम्मान किया। अध्यक्षता श्री ओमप्रकाश गुप्ता और संचालन श्री अलित कुमार ने किया। क्लब के सचिव पूर्व प्रधानाचार्य श्री विमल जैन ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर रोटरी क्लब के सदस्य उपस्थित थे।

डिंडोरी, राजीव जैन। महावीर जंयती के पुनीत अवसर पर नगर के प्रमुख मार्गों से भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। दिगम्बर समाज के समस्त परिवारों ने अपनी सहभागिता देकर भगवान महावीर स्वामी के संदेशों को जन जन तक पहुंचाने का प्रण लिया। सभी मंदिरों में विशेष पूजा अर्चना के साथ अनेक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, जिसमें बच्चों एवं महिलाओं ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया।

ललितपुर, शैलेष जैन पिन्टू। दि. जैन पंचायत समिति (रजि.) के तत्वावधान में महावीर जयंती महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। सुबह 6 बजे से प्रभातफेरी निकाली गयी जिसमें जैन समाज ने भगवान महावीर की जय जयकार करते हुए नगर परिक्रमा की। तत्पश्चात मंदिरजी में भगवान महावीर का पालना झांकी प्रदर्शन तथा महावीर स्वामी का अभिषेक हुआ। शाम 6 बजे से अटाजी मंदिर से विशाल शोभा यात्रा प्रारंभ हुई जो विभिन्न मार्गो से होती हुई रात 10 बजे सावरकर चौक पर समाप्त हुई। शोभयात्रा में भगवान महावीर और विभिन्न जैनाचार्यो के चित्र महावीर स्वामी के जीवन से संबंधित चित्र प्रदर्शित किये गये। विभिन्न स्वयंसेवी संगठनो ने अखाड़े, चाचर और लेजम आदि का आकर्षक प्रदर्शन किया गया। श्री दि. जैन गोलालारीय समाज के नवयुवकों के संगठन **'जन मित्र सेवा समिति'** द्वारा ललितपुर ग्राम पनारी में स्थित मदर टेरेसा होम के असहाय मरीजों में सुबह का खाना, फल एवं शाम को चौबयाना मुहल्ला में शोभा यात्रा का शीतल पेय पिलाकर स्वागत किया, जिसे सर्व जैन समाज ने सराहा। कार्यक्रम में गोलालारीय समाज के श्रेष्ठियों और नवयुवकों ने तन मन धन से सहयोग किया।

गंज बासौदा, शांतिकुमार जैन। भगवान महावीर स्वामी की जयंती के शुभ अवसर पर श्रीजी की पूजा अर्चना के बाद नगर में गांधी चौक से महावीर बिहार तक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा भजन कीर्तन व जयकारों के साथ प्रांरभ हुई। इसमें विद्यासागर संस्कार पाठशाला की बालिकायें डांडिया खेलती हुई चल रही थी। युवकों को दो मंडल अपने अपने दिव्य घोष के साथ गरिमापूर्ण अपनी प्रस्तुति दे रहे थे।

चांदी की पालकी में भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा विराजमान की गई थी। जिसे जैन समाज के लोग अपने कंधो पर लेकर चल रहे थे। तेज धूप के बावजूद उनके श्रद्धाभाव में कोई कमी नहीं नजर आ रही थी। शोभायात्रा में चल रही एक ट्रॉली में समवशरण की झांकी भी सजाई गई थी। इसे देखने से चारों तरफ भगवान महावीर के ही दर्शन होते थे। शोभायात्रा का जगह जगह भव्य स्वागत किया गया। समाज के लोगों द्वारा जगह जगह आरती उतारी, दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप गंजबासौदा के अध्यक्ष शांतिकुमार जैन व सचिव दिनेश जैन के नेतृत्व में पूरे कार्यक्रम में व्यवस्थाओं में भरपूर सहयोग प्रदान किया। शोभायात्रा में शामिल सभी लोगों को पेयजल व शरबत पिलाकर स्वागत किया गया।

विहिप प्रांतीय मंत्री श्री राजेश तिवारी ने भगवान महावीर स्वामी की आरती उतारी। अंत में शोभा यात्रा महावीर बिहार पहुंची जहां पर श्रीजी का अभिषेक, शांतिधारा व पूजा अर्चना हुई। कार्यक्रम में हजारों पुरुष महिलाओं व बच्चों ने हिस्सा लिया। अंत में सहभोज आयोजन किया गया।

दि. जैन सोशल ग्रुप की ओर से सरकारी अस्पताल में भर्ती मरीजों को फल वितरित किये गये साथ ही त्रिमूर्ति जैन महिला मिलन की सदस्याओं ने रेल्वे स्टेशन पर गरीब असहाय लोगों को खीर पूड़ी का वितरण किया।

सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ संपन्न

सीहोर, प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मति सागरजी महाराज के सानिध्य में श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान विभिन आयोजनों के साथ अभूतपूर्व धर्मप्रवाचन करते हुए संपन्न हुआ। अंतिम दिन विशाल चल समारोह निकाला गया जिसमें हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा की गई। चल समारोह में ऊंट, घोड़े, हाथी के साथ ही हजारों की संख्या में जनसमुदाय उपस्थित था। कार्यक्रम में सातों दिन सकल जैन समाज सीहोर एवं बाहर से आये अतिथियों की भोजन व्यवस्था वात्सल्य भोज सौजन्यकर्ताओं द्वारा की गई। एक दिन के सौजन्यकर्ता गोलालारीय दर्शन के विशेष सहयोगी एवं आयोजन समिति के कोषाध्यक्ष डॉ. पंकज जैन 'विदिशावाले' द्वारा की गई।

नियुक्ति पर बधाईयाँ

श्री दिगम्बर जैन मंदिर सुखलिया पंचायती ट्रस्ट के त्रैवार्षिक चुनाव में अस्थायी ट्रस्टी के रुप में श्री राजेन्द्र कुमार जैन एवं श्री दीपक कुमार निर्वाचित हुए है।

श्री दीपककुमार जैन को कार्यकारिणी समिति में सर्वानुमति से कोषाध्यक्ष पद नियुक्त किया गया। **श्री राजेन्द्र कुमार जैन** श्री गोलालारीय समाज इन्दौर के अस्थाई ट्रस्टी रह चुके है।

''गोलालारीय दर्शन'' परिवार
की ओर से हार्दिक बधाईयां।

इन्दौर, शशि जैन। भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। शहर के सभी मंदिरों में प्रभातफेरी पश्चात पूर्ण मनोयोग से पूजा अर्चना कर श्रीजी का अभिषेक किया गया। गोलालारीय समाज मंदिर 64 न्यू देवास रोड़ पर स्थानीय समाजजनों के साथ समाज के ट्रस्टीगण भी पारंपिक शोभायात्रा में हर्षोल्लास पूर्वक शामिल हुए। शहर के दिगम्बर जैन समाज 'सामाजिक ससंद' के तत्वावधान में भव्य शोभायात्रा उत्साहपूर्वक निर्धारित मार्ग पर होती हुई कांच मंदिर पर संपन्न हुई। एक किलोमीटर लंबी इस शोभायात्रा में शहर के अनेको सोशल ग्रुप, समाज संगठन व क्षेत्रीय मंदिरों की झांकियां थी। जो जनचेतना के आकर्षक नारों से जनसमूह को जागृत कर रही थी। गोलालारीय समाज ने इस भव्य शोभायात्रा में 'बेटी बचाओं' के विचार के साथ अपनी सहभागिता निभाई। शोभायात्रा में सबसे बड़े समूह के रुप में चलते हुए समस्त समाजजनों के हाथों मे 'बेटी है तो कल है' बेटी दोनों परिवार को जोड़ने का काम करती हैं, नारों ने शोभायात्रा मार्ग पर उपस्थित जनसमूह को सोचने पर विवश करा। शोभायात्रा मार्ग पर विभिन्न संगठनों द्वारा लगाए गए मंचो ने समाज के इस प्रयास को काफी सराहा। 'बेटी बचाओं' थीम पर निर्णायक मंडल द्वारा गोलालारीय समाज को 13वां स्थान प्राप्त हुआ। समाज अध्यक्ष श्री कोमलचंदजी ने उपस्थित सभी सदस्यों का आभार प्रकट करते हुए भविष्य में भी इसी तरह एकजुट होकर कार्य करने का भरोसा दिलाया। शोभा यात्रा मार्ग पर में शामिल सदस्यों के लिए सशुल्क भोजन की व्यवस्था समाज की ओर से की गई थी।

जीवन की शाम

संसार और मोक्ष के
भावों और अभावों के
विपरीत सिरों को सम्हाले सम्हाले
घूमने–घुमाने में
मिलने–मिलाने में
पढने–पढ़ाने में ही
इस जिंदगी की शाम हो गई।
आ चुके हैं अब उम्र के प्लेट फार्म पर
इंतजार में – मौत की ट्रेन के।
शायद अभी ट्रेन आने में कुछ देर है
सिग्नल भी नहीं हुआ है
तो कर रहे हैं इधर–उधर चहलकदमी हम
और याद कर रहे हैं पुराने दिन, पुराने क्षण,
मित्र और सभी रिश्तेदारगण,
परिचितों और उनके सुगंध भरे दिल,
जब हम घिरे थे– छोटे छोटे सुखों के सितारों से
जो टंके रहे गये–बीते काल की काली चादर में
और उस चांद की की चाह में जागा किये
जिसे कभी ऊगना ही न था।
रह रहकर याद आती हैं खास घटनायें
तभी घंटी बजी –
शायद ट्रेन ने पिछला स्टेशन छोड़ दिया है
तभी ख्याल आया कि हम
अपनी गठरी सम्हाल लें
पीछे मुड़कर निहार लें
कहीं कुछ छूट नहीं गया है?
उन गुनाहों को निहार लें
जो यहीं न छूट जायें बाद हमारे
जो दूसरों की तकलीफ का कारण बनें।
तो ज्यादा अच्छा है कि
ले चलें साथ अपने–अपनी कहानी
इसी में है बुद्धिमानी।
विवेकवान को राग द्वेष, प्रेम–स्नेह
दया उपकार पर का अपने पर उपकार,
चैतन्य की स्थिति–सभी याद रहते हैं।
यद्यपि वे जानते हैं कि
रागादि तो चैतन्य की स्थिति में ही होता है
जगत जिसमें सोता है विवेकवान उसमें
जागता है
जिसमें ज्ञानी जागते हैं
उसमें जगत सोता है
जिसमें जगत जागता है
उसमें ज्ञानी सोते हैं।
जिसके जीवन में
सत्लक्ष्य, सत्संकल्प और सत्कर्म हैं
वे ही मोक्ष में जीते हैं।
सदाचार रुपी धन के सामने
स्वर्ण, रजत, हीरे मोती का कोई
मूल्य नहीं होता है। अत: स्वर्ण
मोहरों के संग्रह करने के बजाय,
स्वर्ण मयी विचारों का संग्रह
करना ही हितकर है।
विराट अंधकार के उमड़ने के पहले की
यह जीवन की शाम है
इसमें विषय कषायों में डूबने का नहीं
सम्यग्दर्शन के शीतल प्रकाश का काम है।

– प्रेमचन्द जैन, वैभव नगर, इन्दौर

क्या अंतरजातीय विवाह समाज को पतन की ओर ले जा रहे हैं?

गतांक से आगे –

जिस प्रकार पशुओं के कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र हैं ठीक उसी प्रकार वनस्पतियों, अनाज एवं फलों को संकरित कर उत्पादित करने के लिये खाद एवं बीज निगम के फार्म हाउस मौजूद है। जैसा कि पूर्व में लिखा जा चुका है कि अनाज, वनस्पति एवं फल विभिन्न जाति के पाये जाते हैं, फार्म हाउस में इन्हें अलग अलग प्रजाति को पृथक पृथक क्यारियों में बोया जाता है। पुष्पित होने पर एक प्रजाति का पुष्प पुंकेसर कोमल हाथों से दूसरी प्रजाति के पुष्प पर गिराया जाता है एवं तत्काल उस निषेचित पुष्प को कपड़े की छोटी थैली से ढंककर बांध दिया जाता है ताकि वह पुष्प स्वजाति के पुंकेसर के संपर्क से दूर रहे। यह कपड़े की थैली एक अंतराल के बाद उतार ली जाती है। अब तक पुष्प के फल या बीज बनने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। परिपक्व होने पर यह बीज किसानों को 'उन्नत किस्म' के नाम से अधिक दामों पर बेचा जाता है। यह बीज अगले सीजन में कृषक द्वारा बाये जाने पर एक ही प्रकार के पौधे एवं पुष्प तत्पश्चात फल प्राप्त होते हैं साधारणत: यह फल अथवा सब्जी (वनस्पति) आकर्षक एवं गूदेदार दिखाई देती है और बाजार में ग्राहकों द्वारा खरीद ली जाती है इस प्रकार किसी भी वानस्पतिक उत्पाद को संकरित किया जाता है जो कि कृत्रिम तरीके से ही प्राप्त किया जाना संभव है। इस संकरित वानस्पतिक उत्पाद में निम्नलिखित दोष है जिसकी ओर सुधी पाठकों का ध्यान आकर्षित करना मैं अपना धर्म एवं कर्त्तव्य मानता हूँ –

1) संकरित उत्पाद स्वाद, गंध एवं औषधीय गुण से सर्वथा हीन होते है; इनके उपभोग से मात्र पेट का भरण होता है, पोषण नहीं। हमारी बीजोत्पादक क्षमता को ऐसी सामग्री के उपयोग से पुष्ट नहीं किया जा सकता।

2) संकरित फल में बीज या तो होते नहीं है अथवा अत्यंत क्षीण होते है । कमजोर एवं कम मात्रा में जो कि वंश वृद्धि के लिए सर्वथा प्रतिकूल है।

3) लगभग तीन से पांच बार के चक्र में अर्थात् पुन: पुन: बोया जाने पर फल अथवा पौधा, अल्पल्प, कमजोर एवं उत्पादन शून्यवत् हो जाता है, फलत: किसानों को खाद एवं बीज निगम से पुन: तैय्यार अथवा बहुराष्ट्रीय कंपनियों से तथाकथित उन्नत किस्म का बीज बार बार खरीदना पड़ता है। कृत्रिम तरीके से निषेचित पौधा एवं उत्पाद जब स्वयं के बीजों को पुष्ट नहीं करता तब ऐसी सामग्री का उपभोग हमें भी किसी प्रकार की पुष्टता प्रदान नहीं करता। पशुओं के कृत्रिम गर्भाधान से प्राप्त उत्पादक पदार्थ एवं उन पशुओं की संतानों के बाबत गुण हीनता को हम इसी प्रकार जान सकते हैं वस्तुत: इस तथ्य की ओर सुधी पाठकों को ध्यान आकर्षित किया जा रहा है कि पशु अपनी जातिगत गंध के माध्यम से स्वाभाविक तरीके से नर–मादा एक दूसरे के नजदीक आते हैं तब संतान एवं उत्पाद की गुणवत्ता पर कोई प्रश्नचिह्न नहीं है, यही स्वाभाविक है और प्रकृति सम्मत भी । चूंकि मनुष्य अपनी स्वाभाविक गंध एवं पहचान भूल गया है अत: ऋषि मुनियों ने हमें जाति संस्था में वर्गीकरण कर आपस में पहचानना सिखाया है। इस पर टिके रहकर हमें अपना अस्तित्व बचाये रखना है।

भौतिक दृष्टि से देखने पर अंतरजातीय संबंधों के फलस्वरुप उत्पन्न संतानों के रुप एवं वाचालता पर सभी मुग्ध हो सकते है; किन्तु इन संतानों के वयस्क होने पर सभी प्रकार के गंभीर परिणाम इनके जन्मदाता को ही भोगने पड़ते हैं।

ऐसे तमाम दम्पति जिन्होंने अंतरजातीय शादियां की है इन सबकी संताने यदि परस्पर आगामी कई पीढ़ियों तक शादियां करे तो लगभग उसे पांच पीढ़ी पश्चात संतान के क्रम को चलाना मुश्किल हो सकता है। कारण यह है कि प्रकृति इन संतानों की बीजोत्पादक क्षमता को निरंतर कम करती चलती है।

यूरोपीय देशों में जनसंख्या के स्थिर रहने एवं निरंतर आ रही जन्मदर में कमी का रहस्य शायद सुधी पाठकों को समझ आ रहा होगा । अंतरजातीय संबंधों के परिणाम मात्र उपरोक्त तक ही सीमित नहीं हैं। विभिन्न यौन रोगों का कारण इस संबंधों में अंतरनिहित है।

– राजकुमार जैन 'करैरावाले'

अभी तक आपने पढ़ा –

प्रत्येक जीव को प्राप्त शरीर एक योगिकीय संरचना है मामूली सा परिवर्तन भी मूल यौगिक अर्थात बीज अर्थात आत्मा या जीव को प्राप्त शरीर का संपूर्ण यौगिकीय चरित्र को बदल देता है साथ ही रुप, गुण, धर्म भी बदल जाते है। यह वैज्ञानिक एवं प्राकृतिक व्यवस्था है।

अनाज, औषधि व दुधारु पशुओं में योगिकीय परिवर्तन का असर हम देख ही रहे है प्रकृति के नियमों के विपरित निषेचन से रचना किसी का भी प्रतिनिधित्व नहीं करती है शनै–शनै यह संरचना अपनी स्वाभाविक ऊर्जा, गुण एवं पोषक तत्व खो देती है।

चौरासी लाख योनि में श्रेष्ठतम मनुष्य जन्म में हम अपने वंश, कुल, परम्परा और श्रावकपन को अक्षुण्य बनाए इसके लिए हमें गंभीरता से विचार करने की जरुरत है।

पाठको की कलम से ...

गोलालारीय दर्शन पत्रिका निरंतर प्राप्त हो रही है। गत अंक में समाज की प्रतिभा सिम्मी जैन की उपलब्धि को आपने संपूर्ण समाज के सामने बहुत ही खूबसूरती से रखा है। जिसके लिए साधुवाद।

निश्चित ही समाज को इस प्रकार की पत्रिका की नितांत आवश्यकता थी। समाजजनों को धार्मिक कार्यों में दान के साथ समाज निर्माण के कार्यों में संलग्न इस पत्रिका को भी आर्थिक संबल प्रदान करना चहिए ताकि यह पत्रिका राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिमाह प्रकाशित हो सके।

– सीमा अनिल जैन, ललितपुर

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ स्तरीय है श्री राजकुमार जैन का लेख 'क्या अंतरजातीय विवाह' व साधना जैन की रचना 'मृत्युभोज सर्वथा अनुचित' सोचने पर विवश कर देती है। प्रतिभाशाली बच्चों को सम्मानित कर एक अनुकरणीय पहल शुरु की है। 'हमारे संगठन हमारी शक्ति' से आप स्थानीय समाज के प्रतिनिधियों के विचारों एवं योजनाओं से अवगत करा रहे है, अच्छा प्रयास है। मेरा मानना है कि आपने परिवार में होने वाले मांगलिक प्रसंगों की सचित्र जानकारी प्रकाशित कराकर हम इस पत्रिका को आर्थिक योगदान प्रदान कर तो सकते ही है। साथ ही अपनी खुशियों को अपनों के बीच बांटने का आनंद भी उठा सकते है।

– श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, अहमदाबाद

कल, आज और कल

कल की आशा में जीने वालों,
किसन कल को देखा है;
करना है जो आज करो वह,
कल कर्मो की रेखा है।
किसने देखा आने वाला कल,
क्यों ? कहाँ ? कब ? क्या? होगा;
अशुभ कर्म से अशुभ उदय है,
शुभ कर्मों से शुभ भोगा ।
कल की चाहत, कल के सपनें,
पल में – निष्फल हो जाते हैं;
आशाओं के स्वप्न सलोने,
अंधियारों में खो जाते हैं।
अंधियारे की काली कालिख,
जब जीवन पर छाती है;
उगता सूरज ढल जाता है,
रात लंबी हो जाती हैं।
रातों के वीराने में हम,
हर पल कल को रोते हैं;
आते कल की आशा में,
हाथ आज से धोते हैं।
हाथ लगा न आज अगर तो
कल भी हाथ न आयेगा;
दूर क्षितिज के जल सा कल,
मृग तृष्णा में छिन जायेगा।
मृगतृष्णा कब छूटी है,
कब टूटे है आशा के तार;
झूठी ममता, झूठी माया,
झूठे दुनिया के व्यापार ।
आशावादी कहलाने वालों,
कैसे जीवन को सहलाओंगे,
दो क्षण झूठा जीवन जीकर
कब तक मन को बहलाओंगे।
आज मिला है तुम्हें प्रिये जो,
फल है कर्मों का बासी;
ऐसा कुछ तुम आज करो,
होवे न जग मे हंसी।
कैसा कल और कैसे सपने,
कैसे कल की आशा की;
हर उजले दिन के पीछे पाई,
नीरस निशा निराशा की।

– सुखनंदन कुमार जैन 'प्रशांत', राजदीप पार्क, अहमदाबाद

जीवन का यह उज्जवल दीपक
पल पल बुझता जावे
मानव मन के महल बनावे
तन कुटिया क्षण क्षण गिरती जावे।

बीतने वाली हर घड़ी को,
कौन लौटाकर लायेगा
इस धरा का इस धरा पर
सब धरा रह जायेगा।

आशा पल पल बढ़ती जावे
आयु घटती जावे
काया निशिदिन जर्जर होवे
माया बढ़ती जावे

आज सरीखा है मंगल अवसर,
कल आवे, न आवे
कौन जानता है कि किस पल,
क्या घटना घट जावे।

दीन दुखियों का सहारा बना स्वस्ति क्लब

स्वस्ति क्लब दि. जैन गोलालारीय महिला संगठन पूर्वी इकाई गोयल नगर की सदस्यों ने अपने लक्ष्य की ओर दूसरा कदम बढ़ाते हुए अंधाश्रम के बाद सभी सदस्यायें परदेशीपुरा स्थित वृद्धाश्रम गयी । वहां बुजुर्गो के साथ समय बिताया, भजन कीर्तन, नृत्य व मनोरंजक गेम्स खिलाये। सभी बुजुर्गो ने बड़े ही उत्साह व उमंग के साथ सभी गतिविधियों में भाग लिया। उन्होंने अपने दु:ख दर्द हमारे साथ बांटे जिसे सुनकर महिलाओं की आँखें भर आई। स्वस्ति क्लब की महिलाओं की ओर से एक विनम्र विनती है कि किसी भी हालत में हम अपने बुजुर्गो को वृद्धाश्रम न भेजे । वहां से उनके दुखों की कल्पना कोई भी नहीं कर सकता। इसी श्रृंखला में क्लब की सदस्याओं ने

अप्रैल माह में शहर के बड़े अस्पताल के कैंसर विभाग गये। वहां का दृश्य देखकर तो सभी के दिल दहल गया और लगा कि एक बुरी लत का इतना भयानक सिला। सदस्याओं ने सभी कैंसर मरीजों को फल बिस्कुट, ताजा बादाम आदि वितरित किये तथा विभाग को दवाइयाँ रखने के लिए एक अलमारी भेंट की। एक विनती पुन: हमारी ओर से यदि आपके परिवार में किसी को भी तम्बाकू खाने की लत है तो उसे छोड़ दे । जो हम देखकर आये है वह किसी को भी न देखना पड़े। इसी भावना के साथ क्लब की सभी सदस्यायें श्रीती अर्चना जैन, शशि जैन, डॉ. प्रतिभा जैन, रजनी जैन, नीति जैन, निर्मला जैन, सोनाली जैन, शशिप्रभा जैन, स्मिता जैन, संगीता जैन मौजूद थी।

गर्मियों की संजीवनी बूटी पुदीना

गहरे हरे रंग की पत्तियों वाले पुदीने की उत्पत्ति यूरोप से मानी गई है। प्राचीन काल में रोम, यूनान, चीनी और जापानी लोग पुदीने का प्रयोग विभिन्न औषधियों के तौर पर किया करते है।

खासकर गर्मियों में पैदा होने वाला पुदीना औषधीय और सौंदर्योपयोगी गुणों से भरपूर है। इसे भोजन में रायता, चटनी तथा अन्य विविध रुपों में उपयोग में लाया जाता है।

****** औषधीय गुण ******

✲ पुदीने का रस कालीमिर्च और काले नमक के साथ चाय की तरह उबालकर पीने से जुकाम, खाँसी और बुखार से राहत मिलती है। ✲ इसकी पत्तियाँ चबाने या उनका रस निचोड़कर पीने से हिचकियाँ बंद हो जाती है। ✲ सिरदर्द में ताजी पत्तियों का पेस्ट माथे पर लगाने से दर्द में आराम मिलता है। ✲ पेट संबंधी किसी भी प्रकार का विकार होने पर एक चौथाई चम्मच पुदीने के बीज खाएँ अथवा 1 चम्मच पुदीने का रस को 1 कप पानी में मिलाकर पिएँ। ✲ अधिक गर्मी या उमस के मौसम में जी मिचलाए तो एक चम्मच सूखे पुदीने की पत्तियों का चूर्ण और 1/2 छोटी इलायची पावडर को एक गिलास पानी में उबालकर पीने से लाभ होता है। ✲ पुदीने की पत्तियों को सूखाकर बनाए गए चूर्ण को मंजन की तरह प्रयोग करने से मुख की दुर्गंध दूर होती है और मसूड़े मजबूत होते है। ✲ एक चम्मच पुदीने का रस, दो चम्मच सिरका और एक चम्मच गाजर का रस एक साथ मिलाकर पीने से श्वास संबंधी विकार दूर होते हैं। ✲ पुदीने के रस को नमक के पानी के साथ मिलाकर कुल्ला करने से गले का भारीपन दूर होता है और आवाज साफ होती है। ✲ पुदीने का रस रोज रात को सोते हुए चेहरे पर लगाने से कील, मुहाँसे और त्वचा का रुखापन दूर होता है।

संकलन – अवनि जैन, स्कीम नं. 74, इन्दौर

जल ही जीवन है।

जल के प्रयोग की सामान्य विधि – जल हमारे जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण पेय है। जल के बिना स्वस्थ जीवन की कल्पना संभव नहीं है। मनुष्य शरीर में प्रतिदिन जल की आवश्यकता होती है। ताकि शरीर के आंतरिक अंग अपनी पूर्ण कार्यक्षमता से कार्य कर पाएँ व शरीर के उत्सर्जन संस्थान (किडनी, आँते, त्वचा व अन्य उत्सर्जन अंग) विजातीय द्रव्यों का निष्कासन पूर्ण कार्यक्षमता से कर सकें व शरीर आंतरिक व बाह्य रुप से स्वस्थ रह सकें । रक्त का पतला होना अत्यावश्यक है क्योंकि पतला रक्त ही संपूर्ण शरीर में निर्बाध रूप से संचरित हो सकता है और यदि रक्त गाढ़ा होगा तो वह संपूर्ण शरीर के अंगो को रक्त के माध्यम से पोषण प्रदान नही कर पाएगा। जल का सेवन कम करने से रक्त का प्रवाह संपूर्ण शरीर में ठीक प्रकार से नही हो पाता है व रक्त गाढ़ा हो जाता है।

प्रात: अपनी प्रकृति के अनुसार व संयमित जल की मात्रा का ही सेवन करें। बहुत अधिक जल का सेवन करने की आवश्यकता नहीं है। प्राय: मनुष्य प्रात:काल अत्यधिक जल या अत्यधिक कम जल की मात्रा का सेवन करते हैं। प्रात:काल 1–2 गिलास का सेवन कर सकते है। भोजन के 1 घंटे बाद व 1घंटे पहले जल का सेवन करें। भोजन के दौरान न्यूनतम जल (100 मिली से 150 मिली) का ही सेवन करें। भोजन में व जल के सेवन में कम से कम 1 घंटे का अंतर अवश्य होना चाहिए। भोजन के दौरान जल का सेवन पाचक रसों को पतला कर देता है इससे पाचन प्रभावित होता है। भोजन के प्रत्येक कौर को 32 बार चबाकर खाने से कब्ज में लाभ होता है।

जल का निषेध – जल का विशेष परिस्थितियों में सेवन नहीं करना चाहिए। शौच करने के तुरंत बाद, तेज धूप में आने के पश्चात बिना शरीर के तापमान को सामान्य किए, व्यायाम व कठिन परिश्रम करने के पश्चात, भोजन के तुरंत बाद व पहले, तरबूज, खरबूज, अमरुद, सीतफल व अत्यंत गर्म आहार के पश्चात व मैथुन के तुरंत बाद जल का सेवन कदापि नहीं करना चाहिए।

अत्यधिक जल के सेवन से हानियाँ – जिस प्रकार सामान्य से न्यूनतम जल का सेवन शरीर को हानि पहुँचाता है, उसी प्रकार अत्यधिक जल का सेवन भी शरीर के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। अत्यधिक जल का सेवन मोटापा बढ़ाता है, गुर्दे के रोग, बुढ़ापा, त्वचा पर अत्यधिक झुर्रियां व अनेक रोगों को आमंत्रण देता है। अत: 2–3 लीटर (10–12 गिलास) से अधिक जल का सेवन कदापि नहीं करना चाहिए।

न्यूनतम जल के सेवन से हानियाँ – जिस प्रकार अत्यधिक जल का सेवन शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, उसी प्रकार सामान्य से कम जल की मात्रा का सेवन करना अनेक रोगों को आमंत्रण देता है। जल का न्यूनतम सेवन करने से कब्ज, पाचन संबंधी अनेक विकार, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, कठिन कब्ज, किडनी के रोग, खून का जमना, जोड़ों का दर्द, मोटापा व अन्य रोग हो जाते है। जल हड्डियों के जोड़ों का आधार प्रदान करने वाली गद्दियों का लचीलापन प्रदान करता है। जल के अभाव में इन गद्दियों में सिकुड़न आ जाती है व इस वजह से जोड़ों की हड्डियाँ आपस में टकराती है व दर्द होने लगता है। कम जल के सेवन में मांसपेशियाँ कमजोर होती है।

भक्तामर के माध्यम से मेलजोल का सार्थक प्रयास

इन्दौर, अनुपमा जैन । आज की भागमभाग भरी जीवन शैली में जहां हम अपने परिवार के सदस्यों से मिलने का ही समय नहीं निकाल पाते, वहीं आस–पड़ोस और परिचितों से भी दूर होते जाते है। समाज के लोगों से भी मंदिरजी में जय जिनेन्द्र ही हो पाती है। आपसी मेलजोल को बढ़ाने की भावना से योजना क्रमांक 74–सी, विजय नगर इन्दौर की रहवासी श्रीमती अनुपमा जैन व श्रीमती कल्पना जैन 'बागो' के संयुक्त प्रयास से अपने पास–पड़ोस की जैन महिलाओं ने माह में एक बार किसी एक के घर पर एकत्रित होकर एक घंटे का भक्तामर पाठ प्रारंभ किया है। इस सत्कार्य में महिलाओं ने उत्साहपूर्ण योगदान दिया है और समूह में उनकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ रही है। इस प्रकार के मेलजोल से भक्तामर पाठ के साथ ही साथ अपनी रचनात्मक अभिरुचियों का आदान प्रदान तथा छोटे छोटे समाजोपयोगी कार्य भी किये जावेंगे। आप भी अपने मुहल्ले/कॉलोनी में ऐसे समूहों का संगठन कर धर्म प्रभावना और रचनात्मक कार्य आरंभ कर सकते है।

हमारा नगर – हमारे मंदिर

इस श्रृंखला में आप अपने नगर के बारे में, आपके नगर के जैन मंदिरों के साथ–साथ अन्य दर्शनीय स्थलों की जानकारी और स्थलों का ऐतिहासिक या पुराणिक महत्व है तो उसका पूर्ण विवरण सचित्र हमें भेजें। हम आपके द्वारा भेजी गई जानकारी समस्त गोलालारीय बंधुओं के साथ बांटेंगे हो सकता है कि हममें से कोई कभी भी आपके नगर में आए तो आपके नगर की विशेषता को देखे बिना जाने का नहीं सोच पाए।

यदि आपको अपने नगर और अपने मंदिरों से लगाव है तो हम उम्मीद करेंगे कि आप हमें सचित्र संपूर्ण जानकारी अवश्य ही भेजेंगे।

– संपादक

होम्योपैथी है आसान इलाज....

फूड पाइजन – ✲ फूड पायजन के कारण कभी भी उल्टी, दस्त, पेट दर्द हो तो – (1) आर्स एल्ब 200 – चार–चार गोली दिन में दो बार /खराब पानी पीने के बाद कोई परेशानी जैसे पेट दर्द, उल्टी, दस्त, हो तो भी आर्स एल्ब 200 ले सकते है।

दस्त होने पर – ✲ एनक्स वोमिका 1 मि. – दिन में एक बार या ✲ पोडीफाइलम 30 – चार गोली दिन में चार बार या ✲ आर्स एल्ब 200 – चार गोली दिन में दो बार या ✲ बॉयोकेमिक 8 नं. – चार गोली दिन में तीन बार

लू (गर्मी और धूप से परेशानी - जैसे सिरदर्द, बुखार, चक्कर आना -

(1) ग्लोनाइज 30 या (2) नेट्रम म्यूर 30 (डिहाइड्रेशन) चार–चार गोली दिन में तीन बार)

बारिश में होने वाली बीमारियाँ

(1) बुखार, खाँसी, सर्दी, हाथ–पैर दर्द, छींके आने पर – रस टॉक्स 30 चार–चार गोली दिन में तीन बार

(2) अचानक बुखार आना, घबराहट, डरना, कहीं भी दर्द होना जो पहली बार हुआ हो तो एकोनाइट 30 चार–चार गोली दिन में तीन बार

(3) गंदा पानी पीने के कारण उल्टी, दस्त हो तो – वेरेट्रम एल्बम 30 चार चार गोली दिन में तीन बार

(4) बारिश में हरे, पतले, चिकने दस्त होने पर – डलकामरा 30 चार चार गोली दिन में तीन बार

(5) ठंड के साथ बुखार आना – मलेरिया एंड चायना 30 चार चार गोली दिन में तीन बार या बायोकेमिक नं. 11 (बुखार) चार–चार गोली दिन में तीन बार ।

– श्री पार्श्वनाथ दि. जैन पारमार्थिक औषधालय,
विजय नगर, इन्दौर

"Youth Kaleidoscope"

Dear Friends !

Golalariya Darshan has started a new column "Youth Kaleidoscope" in which you can send your articles, stories, poems etc. you many send them in English as well. Golalariya Darshan is eager to hear from you guys!

15 years of transforming my mind into brain!

From the diaries of Aayushi Jain

15 years back when I walked into the gate of a building which my mumma assured me is what they call it a school; my tiny fingers holding my mumma's hand and with a water bottle hanging down my neck and a small fluffy little bag resting on my back, never could I fathom that I would end up writing this post recounting how much have I loved my school life. With endless tears rolling down my cheeks and my head stuffed with a raw mind (which I didn't even know what it means), I entered my classroom and right then and there started this perpetual process of transforming my 'mind' into a 'brain'. From learning to shape A, B, C, D,...to piping up the correct pronunciation, all through the while my mind has been transformed into a brainy brain! Now when I sit down flipping through the pages of this cherished book of my collected memories, I recall all those stupid, silly, innocent moments when I peed into my pants and when my friends peed into their pants, when I cried because my friends teased me and when I teased till my friends cried, when we shared a five rupees canteen ka samosa and when we fought for a paanch waali kit-kat!! These vibrant colors in the pages of my life dazzle me inside and out whenever I reminisce these treasured recollections. Looking down my memory lane, those undone shoelaces and half open dizzied morning eyes unfailingly leave a smile on my lips. Those 15 years of my life when I grew to learn and learnt to grow so beautifully epitomize my innocence being transformed into intelligence. Moving on each day laughing and giggling and crying and worrying and shouting and screaming, every day I learnt something new. With never ending deadlines and projects and assignments I learnt to be punctual. Those unpleasant scoldings of teachers and numerous episodes of "Get out of my class!" punishments now become all the more amiable when looked upon superficially. Such is my book of life colored with the vivacious colors of this second home. And after 15 years of this crazy journey through the thick and thin of my life's stages, here do I stand with my naive mind now completely transformed into an astute brain preparing itself to enter into an another world full of constant changes and changing constants...

So..to all my dear friends! Sing your songs, dream your dreams, hope your hopes and pray your prayers. Enjoy these little things in your school life for one day you may look back and realize that they were the big things!

अपेक्षा

यदि हमें जीवन में खुश रहना हो तो कभी किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखना चाहिए। यदि हम किसी से कोई अपेक्षा रखते हैं, और वह उस पर खरा नहीं उतरता, तो दुख होता है। उदाहरण के लिए सभी मां–बाप अपेक्षा रखते हैं कि क्लास में उनका बच्चा प्रथम आये लेकिन सभी बच्चे प्रथम आएं यह संभव नहीं है। और जब उनका बच्चा प्रथम नहीं आता है तो उन्हें दुख होता है। हमें बच्चों से किसी भी प्रकार की अपेक्षा न रखते हुए यह देखना चाहिए कि बच्चे की रुचि किस चीज में है। जैसे कि सीगिंग , डांसिंग या खेलकूद आदि में । जिस भी चीज में रुचि है उसी दिशा में उसे आगे बढ़ाना चाहिए। जरुरी नहीं कि सभी बच्चें पढ़लिखकर डाक्टर या इंजीनियर ही बने। सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़ बहुत से ऐसे नाम है जिन्होंने खेल में अपना व अपने देश का नाम ऊंचा किया है। आखिर में मैं यही कहना चाहूंगी कि अपेक्षा रखनी है तो अपने आप से रखो कि कैसे हम अपने आप को और श्रेष्ठ कैसे बना सकते हैं।

– नीति जैन

आस्था

पर्वतारोहियों का एक दल अजेय पर्वत पर विजय पाने के लिए निकला। उनमें एक अति–उत्साही पर्वतारोही भी था, जो यह चाहता था कि पर्वत शिखर पर विजय पताका फहराने का श्रेय उसे ही मिले। रात्रि के घने अंधकार में वह अपने तंबू से चुपके से निकल पड़ा और अकेले ही उसने पर्वत पर चढ़ना आरंभ किया। बहुत प्रयास करने के बाद शिखर जब कुछ ही दूर प्रतीत हो रहा था तभी अचानक उसका पैर फिसला और वह तेजी से नीचे की तरफ गिरने लगा। उसे अपनी मृत्यु सामने ही दिख रही थी, लेकिन उसकी कमर से बँधी रस्सी ने झटके से उसे रोक दिया। घने अंधकार में उसे नीचे कुछ नहीं दिख रहा था। रस्सी को जकड़कर ऊपर पहुँच पाना संभव नहीं था। बचने की कोई सूरत न पाकर वह चिल्लाया, 'हे ईश्वर... मेरी मदद करो!' तभी अचानक एक गंभीर स्वर कहीं गूँज उठा, 'तुम मुझसे क्या चाहते हो? क्या तुम्हें सच में विश्वास है कि मैं तुम्हारी रक्षा कर सकता हूँ। पर्वतारोही बोला, 'हाँ ईश्वर! मुझे तुम पर पूरा विश्वास है'

'ठीक है, अगर तुम्हें मुझ पर विश्वास है तो अपनी कमर से बँधी रस्सी काट दो', वही आवाज गूँजी। यह सुनकर पर्वतारोही का दिल डूबने लगा। कुछ क्षण के लिए वहाँ एक चुप्पी–सी छा गई और उस पर्वतारोही ने अपनी पूरी शक्ति से रस्सी को पकड़े रहने का निश्चय कर लिया। अगले दिन बचाव दल को रस्सी के सहारे लटका हुआ पर्वतारोही का ठंड से जमा हुआ शव मिला। उसके हाथ रस्सी को मजबूती से थामे थे और वह धरती से केवल दस फुट की ऊंचाई पर था। यदि उसने रस्सी को छोड़ दिया होता तो वह पर्वतीय ढलान से लुढ़कता हुआ मामूली नुकसान के साथ जीवित बच गया होता।

– महक जैन, तिलक नगर, इन्दौर

बिना मात्रा के चार का कमाल

एक सब्जी का नाम	–	परवल
एक रसोईघर की चीज	–	बरतन
स्वस्थ रहने के लिए जरुरी है	–	कसरत
एक वृक्ष का नाम	–	बरगद
एक बीमारी का नाम	–	अलसर
एक गायक का उपनाम	–	सहगल
एक रिश्तेदार	–	समधन
एक प्रकार का मनोरंजन	–	सरकस
एक जानवर	–	अजगर
एक फिल्म का नाम	–	सरगम
शरीर का एक अंग	–	गरदन
जीवन की एक अवस्था	–	बचपन
जहां सैनिक तैनात रहते है	–	सरहद
एक सोते समय की क्रिया	–	करवट
एक पौष्टिक चीज	–	खसखस

– मार्मिका समीर जैन, कक्षा 10वीं
तिलक नगर, इन्दौर

लघु कथा

मित्र महोदय आज की पीढ़ी को कोस रहे थे। आजकल के बच्चे माँ बाप को सम्मान नहीं करते, बड़ों को आदर नहीं देते, अपने दायित्वों को नहीं समझते, संस्कार विहीन होते जा रहे हैं, वगैरह वगैरह। कुछ देर बाद दूसरे शहर में रह रहे उनके वृद्ध पिताजी का फोन आया। पूर्व में उन्होंने किसी कार्य को करवाने का कहा होगा। उसी सिलसिले में पुनः अनुरोध कर रहे थे शायद। मित्र का पारा गरम हो गया और भड़क कर बोले – पिताजी आपने पहले भी कहा था कि अभी मेरे पास समय नहीं है, बहुत काम है । पर आप हैं कि समझते ही नहीं । आप तो रिटायर्ड हो चुके हैं, निठल्ले हैं, सठिया गये हैं, अपनी ही ढपली बजाते रहते हैं, किसी की परेशानी समझते ही नहीं... कहकर गुस्से से फोन पटक दिया।

– विजित जैन, ग्वालियर

णमोकार शक्ति

पिछले साल अचानक डॉक्टरों ने बताया कि मुझे ब्रेन ट्यूमर हैं और जल्दी से जल्दी उसका ऑपरेशन करना जरुरी है। मेरे मम्मी पापा मुझे मुंबई ले गये और वहाँ हिन्दुजा अस्पताल में भर्ती करा दिया। दूसरे दिन सवेरे मेरा ऑपरेशन करना तय हुआ। मेरे मन में थोड़ा डर और घबराहट हो रही थी पर मेरे मम्मी पापा ने मुझे समझाया और हिम्मत दी। मम्मी ने कहा, तुम्हें कुछ नहीं होगा बेटे, तुम सिर्फ णमोकार मंत्र का जपा करते रहना। देखना तुम जल्दी से अच्छे हो जाओगे। ऑपरेशन थियेटर पहुँचने पर डाक्टरों ने मम्मी को बाहर ही रोक दिया और मुझे अन्दर ले गये। मैं मन ही मन में णमोकार मंत्र का जाप करता रहा और पता नहीं कब सो गया (बेहोश हो गया)। जब आँख खुली तो मैं आई.सी.यू. में था और मेरे सिर पर पट्टी बंधी थी। धीरे धीरे मैं ठीक हो गया और घर आ गया। आज मैं बिल्कुल अच्छा हूँ और अपने अंदर णमोकार मंत्र की शक्ति को महसूस करता हूँ। हम सबको रोज णमोकार मंत्र का जाप करना चाहिये।

– संस्कार जैन, कक्षा 7वीं
विजय नगर, इन्दौर

पत्रिका प्रकाशन में हमारे सहयोगी...

श्री चम्पालाल जैन, शिरोमणि संरक्षक

आप अखिल भारतीय गोलालारीय परिषद के अध्यक्ष है। बुंदेलखंड क्षेत्र के प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्र देवगढ़ (ललितपुर) के अध्यक्ष पद पर रहकर आपने इस क्षेत्र का काफी विकास किया है। यहाँ फैली असंख्य प्रतिभाओं को संजोकर क्षेत्र को पूज्यनीय व दर्शनीय स्थल के रुप में विकसित करने के लिए आप सतत् प्रयासरत है।

ललितपुर जैन समाज में आप अपनी विशिष्ट पहचान रखते है समाज के सभी कार्यों में आप सदैव तत्पर रहते है। समाज की युवा पीढ़ी को समाज से जोड़ने में आपका विशेष सहयोग रहा है।

श्री अशोक कुमार जैन, शिरोमणि संरक्षक

अखिल भारतीय गोलालारीय परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष के रुप में आपने समस्त गोलालारीय परिवारों को एक छत के नीचे लाने का प्रयास किया है, एक दशक पूर्व बनाए गए संगठन में नवयुवकों को जोड़कर स्थानीय स्तर पर सामाजिक गतिविधियों के संचालन के लिए प्रेरित किया है।

समाज को संगठित व एक सूत्र में बांधने के लिए आप सदैव तत्पर रहे है। आपकी कार्यकुशलता व संगठन शक्ति से आप विश्व हिन्दु परिषद के उच्च पदों पर भी रहे है।

गौरक्षा की सुरक्षा के लिए आपने अनेको बार आंदोलन किया है। आपके द्वारा भोपाल में गौशाला भी संचालित की जा रही है। समाज के मुखपत्र 'गोलालारीय दर्शन' के प्रकाशन में आपका मार्गदर्शन एवं सहयोग हमें सदैव मिलता रहता है।

श्री नरेन्द्र कुमार जैन, संरक्षक

आपकी प्रारंभिक शिक्षा ललितपुर में हुई, जबलपुर विश्वविद्यालय से वर्ष 1962 में एम.कॉम में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर 'स्वर्ण पदक' प्राप्त हुआ। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में प्रोबेशनरी ऑफिसर्स के रुप में चयन हुआ । 34 वर्षों तक बैंक में उच्च पदों पर रहते हुए अनेको उपलब्धियां पाई । अपने कार्यकाल के दौरान ट्रेनिंग व अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए आप जकार्ता, बैंकाक, मनीला के साथ देश के महत्वपूर्ण आईआईएम अहमदाबाद एवं कलकत्ता में भी अपनी सेवाएं दी है। आप जैन समाज की अनेक संस्थाओं के आजीवन सदस्य है। वर्ष 1998 में जनरल मैनेजर के पद से सेवानिवृत्त हुए।

श्री दिगम्बर जैन गोलालारीय समाज भोपाल में उपाध्यक्ष पद पर रहकर समाज विकास व संगठन को अपनी सेवाएं दे रहे है।

श्री मीतलाल जैन, संरक्षक

गंजबासौदा में जन्में श्री मीतलाल जैन ने एम.ए. हिन्दी में कर 5 वर्षों तक अध्यापन का कार्य किया। प्रयाग से हिन्दी में साहित्य रत्न की उपाधि हासिल की। वर्ष 1955 में पासपोर्ट कार्यालय में नियुक्ति पश्चात देश के अनेक शहरों में रहकर वर्ष 1984 में सेवानिवृत्ति के पश्चात आयुर्वेद में उपाधि प्राप्त कर असहाय लोगों की नि:शुल्क चिकित्सा में सतत प्रयासरत है। समाज के बच्चों को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान निशुल्क दे रहे है।

1988 में नेहरु नगर भोपाल के श्री अजितनाथ दि. जैन मंदिर की स्थापना में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आज भी आप में समाज के लिए कुछ नया करने की चाह है।

श्री ए.एल. फणीश, विशेष सहयोगी

तामोट में जन्मे श्री फणीशजी एम.ए, एल.एल.बी. रतलाम से करने के बाद बैंक परीक्षा उत्तीर्ण कर पंजाब नेशनल बैंक में नियुक्ति पाई। वर्ष 1998 में वरिष्ठ प्रबंधक के पद से सेवानिवृत्ति पश्चात आप दिगम्बर जैन समाज एवं शीतल बिहार न्यास विदिशा में जुड़कर वर्ष 2001 में 2006 तक मंत्री व 2006 से 2009 तक महामंत्री पद पर रहे। वर्तमान में आंतरिक अंकेक्षक के रुप में सेवाएं दे रहे है।

लायंस क्लब विदिशा के अध्यक्ष पद पर वर्ष 2003–04 पर रहने के पश्चात आप महावीर इंटरनेशनल संस्था मे कोषाध्यक्ष का कार्य संभाले हुए है। अन्य कई संस्थाओं से जुड़कर आप सक्रिय योगदान दे रहे है। आप अखिल भारतीय गोलालारीय परिषद के उपाध्यक्ष भी है ।

डॉ. पंकज जैन, विशेष सहयोगी

विदिशा से एम.कॉम, एम.ए., एम.फिल, पी.एच.डी. कर शासकीय महिला पोलीटेक्निक महाविद्यालय सीहोर में विभागाध्यक्ष (प्रथम श्रेणी अधिकारी) के रुप में सेवाएं दे रहे है। आप पं. सागरमल जैन स्मृति न्यास के अध्यक्ष है। विदिशा दिगम्बर जैन समाज, श्री दि. जैन शीतल बिहार न्यास व गोलालारीय जैन समाज में मंत्री पद पर रहकर समाज व संगठन के लिए काफी कार्य किया है। व्या. अर्थशास्त्र कक्षा 11 के लिए म.प्र. शासन द्वारा चयनित कर पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित हुआ है। समाज के कार्यों के प्रति आपका सदैव समर्पण भाव रहा है। रचनात्मक कार्य व लेखन आदि के माध्यम से समाज कार्यों में आपका सदैव योगदान रहा है।

समाज के गौरव

सुश्री मोनिका जैन ने 12वीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर इन्दौर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कॉलेज से दंत चिकित्सक (बी.डी.एस.) की उपाधि प्राप्त की है। आप मड़िया निवासी श्री जीवनधर–सरोज जैन की पोती एवं श्री विजय–आशा जैन इन्दौर की सुपुत्री है।

श्री अंकित जैन ने सी.एस.(इंटर) की दिसम्बर 12 में आयोजित परीक्षा में 27वां स्थान प्राप्त किया है। आपने बी.कॉम तक शिक्षा आगरा में प्राप्त की तत्पश्चात सी.ए. दिल्ली से कर वर्तमान में मुंबई में ट्रेनिंग ले रहे है। आप मंडी बामौरा निवासी दिनेश–अर्चना जैन के सुपुत्र है।

संयुक्त परिवार जैसा आनंद है सोशल ग्रुप

इन्दौर, अर्चना जैन। श्री गोलालारीय सोशल ग्रुप की मीटिंग एक लंबे अंतराल पश्चात जय माता दी गार्डन में आयोजित हुई।

नवीन विचारों एवं नवीन कार्यक्रमों के साथ सोशल ग्रुप की गतिविधियों का संचालन किया गया। पारिवारिक मेलजोल व आपसी सहयोग की भावना को सर्वोपरि रख कार्यक्रम का निर्धारण करा गया। संयुक्त परिवारों के खट्टे मीठे अनुभवों की यादों के साथ खेलकूद व रोचक प्रतियोगिता के साथ पारंपरिक भारतीय खेलों ने जहां बच्चों का मनोरंजन करा वहीं बड़ों ने पूरे जोश खरोश से खेल का हिस्सा बन आनंद उठाया।

ग्रुप में शामिल सभी सदस्यों की इच्छानुरुप प्रत्येक मीटिंग में आपसी सहयोग के साथ परिवारों ने आत्मविश्वास बढ़ाने की भावना पर जोर दिया गया। आज के परिवेश में भागदौड़ भारी जिंदगी में जहां परिवार के सदस्य ही आपस में कम मिल पाते है वहां इस प्रकार के कार्यक्रम सदस्यों का मनोबल तो बढ़ायेंगे ही साथ ही अपने को तरोताजा रखने में इनकी विशेष भूमिका रहेगी। श्रीमती अर्चना जैन एवं शशि जैन ने उपस्थित सभी सदस्यों को भरपूर खेलो के माध्यम से जोड़े रख मनोरंजन कराया। वहीं मीटिंग के संयोजक श्री अनलि कुमार–शोभना जैन, बसंत–अर्चना जैन एवं रजनीश–रीना जैन ने सदस्यों का स्वागत किया। सोशल ग्रुप अध्यक्ष श्री राजेश–सुनीता जैन, सचिव अंचल–सपना जैन एवं कोषाध्यक्ष श्री नीरज–अनु जैन ने उपस्थित सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

अक्षय तृतीया पर्व सानंद संपन्न

विदिशा, कन्छेदीलाल जैन। वैशाख शुक्ल 3 तदनुसार 24 अप्रैल 12, बुधवार को भगवान आदिनाथ के प्रथम आहार दिवस को 'दाता दिवस' (अक्षय तृतीया) के रुप शीतल धाम हरीपुरा में ऐलकश्री नि:शंकसागरजी के सानिध्य एवं श्री राघवजी वित्तमंत्री म.प्र. शासन तथा श्रीमती ज्योति शाह अध्यक्ष न.पा. विदिशा के मुख्य आतिथ्य में बड़े हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया।

आचार्यश्री के आशीर्वाद से जो समवशरण मंदिर का निर्माण चल रहा है, उसकी योजना की जानकारी प्रस्तुत की गई और आचार्यश्री की भावना के अनुसार इस अभियान में अधिक से अधिक समाजजन जुड़े इस हेतु शीतल विद्या अक्षय निधि योजना का शुभारंभ किया गया।

इस हेतु साधर्मी बंधुओं को एक गुल्लक प्रदान की गई, जिसमें संकल्प अनुसार प्रतिदिन निश्चित राशि इसमें जमा करे। नियत अवधि के बाद जमा राशि को शीतल धाम के कार्यकर्ता राशि एकत्रित करेंगे। 500 से अधिक परिवारों ने उत्साहपूर्वक अपनी सहमति प्रदान की है।

गोलालारीय समाज अब वेबसाईट पर भी.....

गोलालारीय समाज की वेबसाईट www.golalariya.com में प्रत्येक नगर के संगठन की सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों की सचित्र जानकारी समाहित की जा रही है। आपसे सादर अनुरोध है कि आपकी जानकारी में अपने समाज के मुनिराजजी, माताजी, आर्यिकाजी, विद्वान एवं साहित्यकारों की संपूर्ण जानकारी हमें सचित्र भेजें। देश–विदेश में सरकारी एवं निजी संस्थानों में उच्च पदों पर कार्यरत प्रशासनिक अधिकारी, प्रबंधक, डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट व कंपनी सेक्रेटरी इत्यादि की जानकारी सचित्र भेजें ताकि समाज की इन प्रतिभाओं का हम उचित सम्मान कर उनका परिचय संपूर्ण समाज से करा सके। संपर्क – बाहुबली जैन, 98272-48748

सहयोग के लिए हाथ बढ़ायें

समाज अपनी सामजिक एवं धार्मिक गतिविधियों की जानकारी समाजजनों तक पहुंचाने के लिए समाचार पत्रों का प्रकाशन करते रहे है। अभी तक हमारे समाज की कोई भी पत्रिका नहीं होने से हमारे संगठनों, संगठनों की गतिविधियों व समाज प्रतिभाओं की ख्याति एक सीमित दायरे तक ही रह जाती थी। हमारी समाज में एक से एक प्रतिभाशाली प्रतिभाएँ है। जिन्होंने अनेको क्षेत्रों में अपनी कार्यकुशलता का परचम लहराया है परन्तु समाज स्तर पर उचित मंच प्राप्त ना होने के कारण उनकी ख्याति से हम सब अवगत नहीं हो पाये ।

एकमात्र इसी पावन उद्देश्य के साथ हमने गोलालारीय समाज का मुखपत्र **''गोलालारीय दर्शन''** के प्रकाशन का बीड़ा उठाया है, जिसमें आपसे सभी तरह का सहयोग अपेक्षित है। आपकी जानकारी में समाज के वे सदस्य जिन्होंने शिक्षा, कला, साहित्य, संगठन व धर्म इत्यादि क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है उनकी सचित्र जानकारी हमें प्रेषित करें। हम इस पत्रिका के माध्यम से उन्हें उचित मंच प्रदान कर सम्मानित करेंगे व संपूर्ण भारत में फैले गोलालारीय समाज से भी परिचित करायेंगे। हमारे प्रयासों पर आपके विचार हमें स्फूर्ति के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।

इस पत्रिका के नियमित प्रकाशन में अर्थ (धन) की महत्वपूर्ण भूमिका है। आपने आज तक मंदिर निर्माण, पंचकल्याणक महोत्सव व अन्य धार्मिक व सामाजिक कार्यों में खुले हृदय से दान कर मान सम्मान अर्जित किया है, उसी तरह समाज जागरुकता के इस पावन प्रयास में भी आप खुले हृदय से आर्थिक सहयोग अवश्य ही प्रदान करेंगे ताकि पत्रिका के प्रकाशन में निरंतरता बनी रहे। समाज निर्माण व जागरुकता के इस अभियान में आप शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक एवं विशेष सहयोगी के रुप में आर्थिक सहयोग प्रदान कर आपको उसी तरह का सुख, पुण्य एवं आनंद प्राप्त होगा , जितना धार्मिक अनुष्ठान या मंदिर निर्माण में दान करते समय प्राप्त होता है। – संपादक

अनुरोध – 'गोलालारीय दर्शन' पत्रिका में आगामी अंक से उन सभी सहयोगी दानदाताओं का सचित्र परिचय प्रकाशित किया जाना है जिन्होंने शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक व विशेष सहयोगी के रुप में इस पत्रिका के लिए धनराशि प्रदान कर हमारे इस छोटे से प्रयास को संबल प्रदान किया है। **जिन महानुभाव ने पत्रिका में सहयोग प्रदान किया है वे अपना संक्षिप्त परिचय अतिशीघ्र भेजें ताकि प्रकाशन किया जा सके।**

श्री दिगम्बर जैन गोलालारीय समिति भोपाल का स्नेह सम्मेलन व चुनाव संपन्न।

भोपाल, प्रदीप कुमार जैन। श्री दिगम्बर जैन गोलालारीय समिति भोपाल का स्नेह सम्मेलन दिनांक 25 मार्च 2012, रविवार को गौशाला जीवदया गौसंरक्षण एवं पशु संवर्धन केन्द्र सूखीसेवनिया, भोपाल में संपन्न हुआ। इसमें समाज के लगभग 400 प्रतिनिधि उपस्थित रहे। इस सम्मेलन में समाज ने अपने वरिष्ठ प्रतिनिधियों का सम्मान कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया। भोपाल के विभिन्न जैन मंदिरों के निर्वाचित पदाधिकारियों का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष दादा कस्तूरचंद्रजी जैन ने नवीन समिति के पदाधिकारियों की घोषणा की तथा उनको अपने कर्त्तव्य परायण पालन की शपथ दिलाई।

परम संरक्षक – श्री रामचरणलाल जैन शांति सीड्स, श्री कस्तूरचंद जैन, श्री गुलाबचंद्र जैन तामोट, **संरक्षक** – श्री अशोक कुमार जैन शांति सीड्स, श्री प्रकाशचंद्र जैन, श्री वीरचंद जैन, श्री नरेन्द्रकुमार जैन, श्री फूलचंद जैन, **अध्यक्ष** – श्री प्रदीपकुमार नौहरकलां, **कार्यकारी अध्यक्ष** – श्री धन्यकुमार जैन देना बैंक, **संगठन मंत्री** – श्री निर्मल कुमार जैन शांति सीड्स, **उपाध्यक्ष** – श्री अभिनंदन कुमार जैन, श्री महेन्द्रकुमार जैन, डॉ. नरेन्द्र जैन, श्री नरेन्द्र कुमार जैन, श्री मुकेश जैन, श्री भैय्यालाल जैन, **महामंत्री** – डॉ. सुधीर जैन, **मंत्री** – प्रो. पी.सी. जैन, श्री राजेश जैन, श्री संजय जैन लालू, श्री प्रदीप जैन, श्री महेश जैन, श्री मुकेश जैन, **प्रचार मंत्री** – श्री विनीतकुमार जैन पत्रकार, **कोषाध्यक्ष** – श्री राकेश जैन, **सहकोषाध्यक्ष** – श्री सुनील जैन, **सांस्कृतिक सचिव** – श्री इंजी. नरेश जैन, **स्वागतमंत्री** – श्री प्रदीपकुमार जैन मयूर सेनेटरी, श्री शिखरचंद जैन, श्री अतुल बदामीलाल जैन, **कार्यकारिणी सदस्य** – श्री आनंद मोहन जैन, श्री मुकेश जैन, श्री विमलकुमार जैन, श्री निर्मलकुमार जैन, श्री सुनील जैन, श्री संतोष जैन, श्री महेशकुमार जैन, इंजी. डी.आर. जैन, इंजी. विद्याकुमार जैन, श्री संजय धीरेन्द्र जैन, श्री कैलाशचंद्र जैन, **महिला प्रकोष्ठ** – श्रीमती आशादेवी जैन शांति सीड्स, श्रीमती ममता जैन, श्रीमती किरण जैन, श्रीमती सुधा जैन, श्रीमती साधना जैन, श्रीमती रेखा जैन नौहरकलां, श्रीमती अनीता जैन, श्रीमती प्रतिभा जैन, श्रीमती वीणा जैन । **गोलालारीय दर्शन परिवार सभी पदाधिकारियों को हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करता है।**

प्रो. अनिल जैन को डॉक्टरेट की उपाधि

गंजबासौदा, शांतिकुमार जैन। जवाहलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय के प्राचार्य **प्रो. अनिल जैन दिवाकीर्ति** को उनके शोध ''म.प्र. के स्ववित्तीय शिक्षण संस्थानों का वित्तीय प्रबंध– एक अध्यापन'' विषय वाणिज्य संकाय पर बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की है। प्रो. जैन ने अपना शोध कार्य डॉ. संजय जैन प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष वाणिज्य शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल के निर्देशन में पूर्ण किया।

गोलालारीय दर्शन परिवार आपकी इस उपलब्धि पर आपको शुभकामनाऐं प्रेषित करता है।

हमारे संगठन हमारी शक्ति...

गोलालारीय समाज ट्रस्ट विदिशा द्वारा धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों को प्रतिवर्ष क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रुप से संचालित करने के लिए वार्षिक गतिविधियों का केलैंडर तैयार किया गया है। ट्रस्ट का उद्देश्य है समाज में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण एवं आपसी परिचय व मिलना जुलना बढ़े ताकि समाज में गतिशीलता बनी रहे। समाज के आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों एवं ऐसे परिवारों के प्रति जिन की देखभाल करने के लिए उनके परिवारजनों का अभाव है उन परिवारों की आर्थिक सहायता एवं उनकी दिनचर्या को व्यवस्थित करने में सहयोग करना उक्त कार्य को प्राथमिकता के आधार पर संपन्न किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष सामान्य सभा का आयोजन जिससे समाज में आपसी मेल मिलाप धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों में सभी की भागीदारी साथ ही समाजजनों की समिति से क्या अपेक्षाएँ है, उन पर विस्तृत चर्चा करना।

पयूर्षण पर्व के समापन पर प्रति वर्ष सामूहिक वात्सल्य भोज का आयोजन एवं सम्मान समारोह करने का निर्णय लिया गया है।

इसमें तीन वर्ग होंगे – प्रथम वर्ग में जिन ने शिक्षा के क्षेत्र में वरीयता सूची में स्थान प्राप्त किया या 80% से अधिक अंक प्राप्त किए, का सम्मान किया जावेगा। दूसरे वर्ग में ऐसे प्रतिभाशाली विद्यार्थी जिन्होंने संघ लोकसेवा/लोक सेवा आयोग/पीएमटी/पीईटी आदि में चयन हुआ हो उन्हें सम्मानित किया जावेगा। तीसरे चरण में जिन्होंने ने देश के लिए, समाज के लिए धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है । ऐसे वरिष्ठजनों को जिनकी आयु 70 वर्ष से अधिक जो समाज का मार्गदर्शन कर रहे हैं उनको सम्मानित किया जावेगा।

प्रतिवर्ष कम से कम दो स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जावेगा।

गोलालारीय परिवार की दिग्दर्शिका के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है। इसमें निम्न अनुच्छेद होंगे –

1) गोलालारीय समाज की वंशावली 2) विदिशा का पुरातत्व इतिहास 3) गोलालारीय समाज की पारिवारिक सूची 4) शादी योग्य बालक बालिकाओं के बायोडाटा 5) उदयगिरी एवं विदिशा नगर के सभी मंदिरों के चित्रों का प्रकाशन करना।

ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य सामाजिक एकता में प्रगाढ़ता बने एवं धार्मिक एवं सामाजिक रुप से सबका कल्याण हो, साधु संतो का आशीर्वाद प्राप्त होता रहे इसलिए वर्षभर सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रम संपन्न करते रहने का निर्णय लिया गया है।

आलेख – कन्छेदीलाल जैन

1008 श्री महावीर दि. जैन परमानंद मंदिर विदिशा का निर्माण पूर्णता की ओर

विदिशा, कन्छेदीलाल जैन। 1008 श्री महावीर दिगम्बर (परमानंद) मंदिर किरी मोहल्ला, विदिशा का शिलान्यास 13 मई 2011 को परम पूज्य ऐलक श्री नि:शंकसागरजी महाराज की प्रेरणा एवं परम पूज्य आचार्य श्री के आशीर्वाद से परम पूज्य मुनिश्री अजित सागरजी एवं ऐलक श्री विवेकानंद सागरजी महाराज के मंगल सानिध्य में चौधरी प्रकाश सर्राफ अध्यक्ष सकल दि. जैन विदिशा के द्वारा किया गया। एक वर्ष पूर्ण होने की बेला में इस त्रिखण्डीय त्रय शिखर से युक्त लगभग 81 फीट उत्तंग जिनालय का अधिकांश कार्य पूर्ण हो चुका है। इसके निर्माण में समाज ने अभूतपूर्व सहयोग प्रदान किया। वर्तमान में इस जिनालय में शिखर निर्माण का कार्य बाहर के एलीवेशन में लाल पत्थर का कार्य तथा मार्बल फिटिंग का कार्य प्रगति पर है। संभव है आगामी 3 माह में यह कार्य पूर्णतया को प्राप्त हो। मंदिर के पंचकल्याणक करवाने हेतु मंदिर कमेटी आचार्यश्री के पास आशीर्वाद लेने जायेगी । पंचकल्याणक जून 2012 में या दीपावली के बाद कराये जाने की संभावना है।

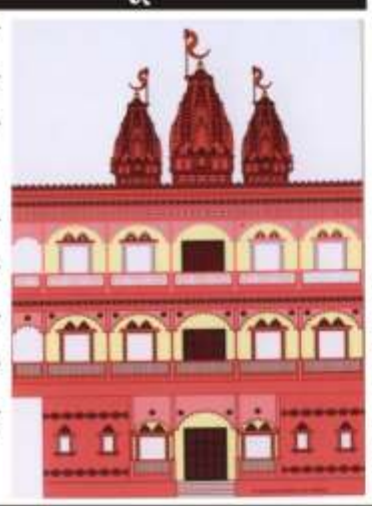

करबद्ध प्रार्थना

समग्र भारत वर्ष में गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज की गरिमा, गौरव पूर्ण इतिहास के पन्नों में सामाजिक दायित्व, समाज संगठन व एकता के साथ वैविध्यपूर्ण अति उपयोगी समाचार पत्र 'गोलालारीय दर्शन' पिछले कुछ सालों से अपनी सेवा दे रहा है। हमें इसका गर्व होना चाहिए। विश्व में सभी संप्रदायों का समाचार पत्र नियमित रुप से प्रकाशित होता है। उसी श्रृंखला में 'गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज' ने भी **गोलालारीय दर्शन** समाचार पत्र के दर्शन करवाये।

इस समग्र महत्वपूर्ण घटना को महसूस कर हर्ष के साथ थोड़ी तकलीफ भी हो रही है। यह समाचार पत्र प्रकाशित करने में साहसिक लोगों को प्रत्येक माह आर्थिक समस्या से जूझना पड़ता है। जो मासिक पत्रिका होनी चाहिए वो पत्रिका फंड के कारण त्रैमासिक करनी पड़ती है।

यदि हम गोलालारीय समाज व उसके भविष्य के प्रति अपना दायित्व बखूबी समझते हैं तो हम सभी को एकजुट होकर इस संस्था के साथ खड़े रहना होगा। समग्र भारत वर्ष में फैली समाज से मेरा व्यक्तिगत सुझाव है कि हम अपनी संस्था, दुकान, ऑफिस, व्यवसाय या व्यक्तिगत शुभेच्छा के रुप में विजिटिंग कार्ड की साइज में सिर्फ एक बार 500/– रुपये का विज्ञापन दे, तो उसके फंड के ब्याज से ही पत्रिका को नया जीवन दान प्राप्त होकर आप तक हम तक पहुंचाने में उन साहसवीरों की हिम्मत दुगुनी होकर वे गर्व से प्रत्येक माह यह पत्रिका प्रकाशित करने में समर्थ हो जावेंगे व हमें नियमित पत्रिका प्राप्त होती रहेगी। विचार मेरा है – सोच आपकी है। – श्रेयांस धर्मसैया सचिव अहमदाबाद

* विनम्र श्रद्धांजली *

* **श्रीमती पुष्पा जैन** बहुत मिलनसार, धार्मिक, मृदुभाषी एवं सरल स्वभावी थी और हमेशा दूसरों के दु:खों में सम्मिलित होकर तथा समाज हित में कार्य किया करती थी। उन्होंने हमेशा घर एवं समाज में रहकर नि:स्वार्थ भावना से कार्य किया।

* **श्री ज्ञानचंद जैन 'बरेठावालो'** का निधन 8 मई 2012 को हो गया है। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर बरेठ के अध्यक्ष रहकर मंदिरजी का निर्माण कराया। आपका सरल एवं धार्मिक स्वभाव सदैव हमारा पथप्रदर्शन करेगा।

* **श्री अभयकुमारजी जैन** का स्वर्गवास दि. 16 मई 2012 को हो गया है। आप पं. भूपेन्द्र कुमार जैन के छोटे पुत्र थे।

* **श्री राजमल जैन 'मणि'** अच्छे कवि, अध्यापक एवं धार्मिक व्यक्तित्व के धनी थे । आपका संपूर्ण जीवन सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में व्यतीत रहा।

* **श्रीमती कमलादेवी** पत्नि श्री बाबूलालजी जैन का स्वर्गवास हो गया है। आप अत्यंत सरल एवं धार्मिक स्वभाव की गृहणी थी। आपकी स्मृति में परिवारजनों ने गोलालारीय समाज के नवनिर्मित मंदिर हेतु 5100 रु. की राशि दान दी है।

श्री गोलालारीय दर्शन परिवार आपके निधन पर सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

दिवंगत समाज सदस्यों को श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए उनका सचित्र परिचय भेंजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

// अनुरोध //

आपके नगर में गोलालारीय समाज का संगठन है तो उनके अध्यक्ष एवं सचिव के फोटो संक्षिप्त जानकारी के साथ व समाज के लिए उनके मन में क्या योजना है उसका विवरण हमें लिख भेंजे। हम आगामी अंको में उनके विचार प्रकाशित कर समाज को अवगत करायेंगे।

हम पेशेवर पत्रकार नहीं है और ना ही हमारे पास पत्रकारिता का कोई अनुभव है। बस एक चाह, एक उद्देश्य है समाज के लिए कुछ अच्छा करने का ।
इस प्रयास में हुई समस्त त्रुटियों के लिए हम सदैव आपसे क्षमाप्रार्थी है।

बायोडॉटा प्रारुप का विवरण

प्रत्याशी का नवीन फोटो

1. क्रमांक
2. प्रत्याशी का पूरा नाम
3. स्वयं / मामा का गोत्र
4. जन्म दिनांक
5. जन्म समय
6. जन्म स्थान
7. शिक्षा
8. कद / वजन
9. वर्ण
10. व्यवसाय
11. वार्षिक आय
12. कुंडली मिलान
13. मंगली
14. पत्र व्यवहार का पता
15. फोन / मोबाईल नं.

---

1. 001
2. संगीता संतोष कुमार जैन
3. फणीश/जामोरिया
4. 14.06.84
5. 5.21
6. गंजबासौदा
7. एम.ए. संस्कृत, एम.एस.सी.
8. 5'
9. गोरा
10. सर्विस– कान्वेंट स्कूल
11. 1.08 लाख
12. हाँ
13. नहीं
14. नानाजी वाली गली, सुभाष चौक, वार्ड नं. 2 गंजबासौदा, विदिशा
15. 07594-221618, 9827444963, 7566080351

---

1. 002
2. मुकेश कुमार महेन्द्रकुमार जैन
3. फणीश/वैद्य
4. 17.09.84
5. 5.35
6. –
7. बी.कॉम
8. 5'6''
9. साफ
10. शेयर ब्रोकर, ग्वालियर
11. 1.80 लाख
12. हाँ
13. –
14. बनखंडेश्वर स्कूल के पास, बल्ला का डेरा, डबरा
15. 07524-225851 9754314796

---

1. 003
2. अमित अशोककुमार जैन
3. फणीश/वैद्य
4. 04.04.80
5. 23.58
6. गंजबासौदा
7. एल.एल.बी.
8. 5'3''
9. गेहुँआ
10. एकाउन्टेण्ट
11. 1.80 लाख
12. नहीं
13. नहीं
14. बाबा वाली गली, बरेठा रोड़, वार्ड नं. 5/68 गंजबासौदा
15. 8871704595

---

1. 004
2. सौरभ स्व.श्री शीलचंदजी जैन
3. सोनप्यारे/पटवारी
4. 18.11.82
5. 7.38
6. –
7. बी.ई. (मेकेनिक)
8. 5'6''
9. गोरा
10. ब्यूरो वेरिटास
11. 5.00 लाख
12. हाँ
13. –
14. शैलेन्द्र किराना स्टोर, पन्ना रोड़ देवेन्द्र नगर, पन्ना
15. 9926560050 07732-272757

---

1. 005
2. अतुल बसंत कुमार जैन
3. सिंघई/पंचरत्न
4. 29.4.81
5. 21.24
6. इन्दौर
7. बी.ई.
8. 5'7''
9. गोरा
10. सॉफ्टवेयर इंजी., मुंबई
11. –
12. हाँ
13. नहीं
14. 100, नेमा नगर, इन्दौर
15. 0731-2330047 9425953797

---

1. 006
2. आलोक सुगनचंद जैन
3. पंचरत्न/फणीश
4. 21.10.86
5. 16.30
6. ललितपुर
7. बी.ए.
8. 5'7''
9. गोरा
10. सर्विस
11. 1.60 लाख
12. हाँ
13. –
14. स्लाईज 2,डी5/52, स्कीम नं. 78 इन्दौर
15. 0731-2575166 9753179216

---

1. 007
2. अवनि डॉ. अरुणकुमार जैन
3. बिलउआ/जारखैरिया
4. 30.07.89
5. 4.40
6. ललितपुर
7. बी.फार्मा, बी.एड.
8. 5'4''
9. गोरा
10. –
11. –
12. हाँ
13. नहीं
14. बिलउआ क्लिनिक, शिव मंदिर के पास 267, बड़ापुरा, ललितपुर
15. 09336251044 09453879208

---

1. 008
2. अनुज अभयकुमार जैन
3. बिलौआ/फणीश
4. 4.10.84
5. 16.30
6. टीकमगढ़
7. एम.बी.ए.
8. 5'6''
9. गोरा
10. असिस्टेंट मैनेजर एक्सिस बैंक
11. 3.00 लाख
12. हाँ
13. नहीं
14. सोना साड़ी संग्रह, घेतगिर कालोनी छतरपुर (म.प्र.)
15. 09926202548 08103778231

---

1. 009
2. अविनेश स्व.श्री नाथूरामजी जैन
3. फणीश/वैद्य
4. 20.01.1981
5. 19.10
6. नरवर
7. एम.ए., बी.एड., स्टेनो हिंदी
8. 5'3''
9. गोरा
10. शा. शिक्षक वर्ग 2
11. 1.20 लाख
12. –
13. –
14. छोटा बाजार, नरवर, जिला शिवपुरी
15. 9993747508, 9425747841

---

1. 010
2. अपूर्व अरविंद कुमार जैन
3. दिवाकीर्ति/वैद्य
4. 10.07.88
5. 8.50
6. इन्दौर
7. एल.एल.एम., एम.बी.ए.
8. 5'7''
9. गोरा
10. वकालात हाईकोर्ट
11. –
12. हाँ
13. –
14. 92/6, परदेशीपुरा, जैन मंदिर के पास, इन्दौर
15. 9425055376, 0731-2570607

---

1. 011
2. दिपेश दिनेश कुमार जैन
3. वैद्य/जखारिया
4. 24.09.84
5. 10.30
6. गंज बासौदा
7. एम.बी.ए.
8. 5'9''
9. गोरा
10. सर्विस–मुंबई
11. 8.50 लाख
12. –
13. –
14. अनाज एवं किराना मर्चेन्ट गंज बासौदा
15. 07594-221068 098264-56688

बायोडाटा प्रकाशन शुल्क 100 रु. की राशि इस पत्रिका को निकालने में एक अहम भूमिका निर्वाह करती है, अपना सहयोग इसी प्रकार देकर हमें संबल प्रदान करें।
आपके बायोडाटा के प्रकाशन में यदि कोई गंभीर त्रुटि रह गई हो तो प्रधान संपादक/संयोजक को सूचित करें ताकि आगामी अंक में संशोधन के साथ निशुल्क प्रकाशन किया जा सके।

---

1. 012
2. अनिता संतोषकुमार जैन
3. किरोरी/–
4. 10.09.85
5. 22.00
6. करेरा
7. बी.कॉम., एम.बी.ए.
8. 5'2''
9. गोरा
10. –
11. –
12. –
13. –
14. बी–33, अजय टेनामेंट–II अमराईवाड़ी, अहमदाबाद–26
15. 9377381217

---

1. 013
2. संभव अशोककुमार जैन
3. सोनव्यारे/सेठ
4. 27.08.86
5. 7.20
6. सतना
7. बी.ए., एल.एल.बी (आनर्स)
8. 5'9''
9. गोरा
10. असि. मैनेजर– कोल इंडिया
11. 7.50 लाख
12. नहीं
13. नहीं
14. 308–ए, महालक्ष्मी नगर इन्दौर
15. 08989007333

---

1. 014
2. शशांक संतोषकुमार जैन
3. सोनप्यारे/पंचरत्न
4. 31.01.87
5. 5.25
6. जबलपुर
7. बी.ई., एम.बी.ए.
8. 5'10''
9. गोरा
10. –
11. –
12. हाँ
13. हाँ
14. एफ–41, न्यू ऑफिसर्स कालोनी सिविल लाईन, सागर
15. 09425356901 09425056901

---

1. 015
2. सौरभ नरेन्द्रकुमार जैन
3. वैद्य/पंचरत्न
4. 28.04.86
5. 15.57
6. डिंडोरी
7. बी.ई., एम.बी.ए.
8. 5'6''
9. गोरा
10. सर्विस – लोकसेवा विभाग
11. 3.00 लाख
12. हाँ
13. –
14. 28, सिद्धार्थ नगर, केशर बाग रोड़ इन्दौर
15. 9425052726, 0731-2761897

गतवर्ष सम्मानित विद्यार्थी को जारी प्रशंसा पत्र का प्रारुप

वर्ष 2011-12 में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को सम्मानित करने हेतु आवेदन फार्म

वर्ष 2011-12 की परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी निम्न प्रारुप में अपना विवरण 30 जुलाई 12 तक **गोलालारीय दर्शन** कार्यालय पर भेज सकते है।

विद्यार्थी का नाम : _____ कक्षा _____

पिता/माता का नाम : _____

डाक का पूर्ण पता नगर के पिन कोड सहित देवे। : _____

नवीन फोटो पर नाम लिख यहां चिपकाएं पिन न लगायें।

कुल अंक : _____ **प्राप्तांक** _____ **प्रतिशत** _____

विशेष उपलब्धि : _____

विशेष : ● कक्षा 1 से 5 तक 85 % ● कक्षा 6 से 8 तक 75 % ● कक्षा 8 से स्नातकोत्तर या प्रोफेशनल कोर्सेस में 65 % या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उक्त प्रारुप, अंक सूची की फोटोकॉपी के साथ 30 जुलाई 12 तक निम्न पते पर भेंजे ताकि आगामी अंक में उन्हे उचित स्थान दिया जा सकें। प्राप्त अंक सूचीयों को वरीयतानुसार प्रकाशित करा जावेगा। उक्त प्रारुप की फोटो कॉपी भी कराई जा सकती है।

फार्म भेजने का पता : **''गोलालारीय दर्शन''**, श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 'सांस्कृतिक भवन'', 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452 003

फार्म भेजने की अंतिम तिथि
30 जुलाई 2012

प्राप्त बॉयोडाटा को प्रकाशित करने में हम पूरी सावधानी रखतें हैं, जिन प्रत्याशियों का संबंध हो गया है उनके अभिभावकों से सादर निवेदन है कि वे संबंध की सूचना हमें प्रेषित करें ताकि **''गोलालारीय दर्शन''** के माध्यम से नवदंपत्ति को बधाई संदेश (मय फोटो) प्रेषित किया जा सकें। यदि आप बॉयोडाटा का पुन: प्रकाशन चाहतें है तो निर्धारित शुल्क 100 रु. एवं उपरोक्त प्रारुप के साथ गोलालारीय दर्शन कार्यालय पर भेज सकते हैं।

श्री फून्दीलालजी जैन अस्ताईवाले के सुपुत्र **राकेश कुमार संग सुषमा जैन** के 6 मार्च 2012 को दाम्पत्य जीवन की 25वीं वर्षगांठ की बहुत बहुत शुभकामनाएँ।
शुभेच्छक – सुपुत्र – राहुल, राकेश कुमार जैन, सुपुत्री – डॉ. प्रियंका–डॉ. नयन ❋ फर्म – राहुल एंटरप्राइजेस, अहमदाबाद

ललितपुर के श्री धन्नालालजी के सुपौत्र, श्री कमलचंद–अंगूरी जैन के सुपुत्र **चि. मंयक** जैन का शुभ विवाह ललितपुर के **सौ. कां. श्रृखंला (नेहा)** सुपौत्री : स्व. श्री खुमानलालजी जैन, सुपुत्री श्री लालचंद–कमला जैन (कडेसरा) से दिनांक 20 अपैल को हुआ।

ललितपुर निवासी श्री गुलाबचंद–लक्ष्मीबाई जैन के सुपौत्र, श्री राजेन्द्रकुमार–मंजू जैन के सुपुत्र **चि. अंशुल** का शुभ विवाह **सौ.कां. रसना** सुपुत्री स्व. श्री बाबूलालजी, पुत्री श्री नेमीचंद–अंजना जैन बरुआ सागर के साथ 22 अप्रैल 2012 को संपन्न हुआ।

अहमदाबाद के श्री अशोककुमार–इन्द्रा जैन के सुपुत्र **चि. अमित** का शुभ विवाह इन्दौर की **सौ. कां. नेहा जैन** सुपुत्री श्री विजयकुमार–आराधना जैन से दिनांक 2 मई को अहमदाबाद में संपन्न हुआ।

श्री प्रदीपकुमार–मीना जैन, झांसी की सुपुत्री **कृति जैन** का शुभ विवाह **चि. विक्रम कुमार जैन** सुपुत्र श्री सत्येन्द्र–मीना जैन, जबलपुर के साथ संपन्न हुआ।

श्री अरविन्दकुमार–उषा जैन, इन्दौर के सुपुत्र **अंकेश जैन** का शुभ विवाह **सौ.कां. अपूर्वा जैन** सुपुत्री श्री सुमनचंद–मीना जैन, ललितपुर के साथ संपन्न हुआ।

''गोलालारीय दर्शन परिवार '' आपको नवदामपत्य जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगलमय जीवन की कामना करता है।

अरनव जैन के जन्मोत्सव पर हार्दिक बधाई
श्री अशोककुमार–लीला जैन, दादा–दादी
श्री आशीष–प्रतिभा जैन, पापा–मम्मी
श्री जिनेन्द्रकुमार–जैनमति जैन,
नाना–नानी एवं जरीवाला परिवार

काव्य एवं कुश के पांच वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई
श्री रमेशचंद–विदी जैन, दादा–दादी
श्री आशीष–सोनल जैन, पापा–मम्मी
श्री सुरेन्द्र–पवन जैन, नाना–नानी
श्री संकेत–प्रियंका जैन, मामा–मामी

चि. वीर जैन के जन्मोत्सव पर हार्दिक बधाई
श्री संतोषकुमार–साधनाबेन जैन दादा–दादी
स्व.श्री अनिलकुमार–स्नेहबेन जैन नाना–नानी
श्री संदीप–आयुषी जैन पापा–मम्मी
एवं समस्त परिवार, अहमदाबाद

प्रसंग जैन के जन्मोत्सव पर हार्दिक बधाई
डॉ. महेन्द्र–चन्द्रप्रभा जैन,
दादा–दादी
हिमांशु–शुभम जैन,
पापा मम्मी एवं समस्त परिवार

सिदेश जैन जन्मोत्सव पर हार्दिक बधाई
श्रीमती चंदा जैन, दादी
श्री निशांत–रेशु जैन, पापा–मम्मी
एवं समस्त परिवार

''गोलालारीय दर्शन परिवार '' की ओर से जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करते उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

गत अंक में प्रिन्टिंग की खराबी से नवदाम्पत्य एवं जन्मोत्सव के फोटो सही नहीं आये। इसके लिए हमे खेद है। हम अपनी भूल को स्वीकार फोटों का पुन: प्रकाशन कर रहें है।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा जैल कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर इन्दौर से मुद्रित एवं श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित